



अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.com

अर्हत् उवाच
बालस्स मंदयं बीयं, जं च
कडं अवजाणई भुज्जो।
मूढ की यह दूसरी मंदता है
कि वह किए हुए पाप
को नकारता है।

नई दिल्ली • वर्ष 25 • अंक 22 • 04-10 मार्च, 2024 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 02-03-2024 • पेज 12 • ₹ 10 रुपये



विकास की पराकाष्ठा तक आध्यात्मिक उन्नयन की दिशा में बढ़े आत्मा

तेरापंथ की समग्र विद्या के शिक्षण-प्रशिक्षण का केंद्र है तेरापंथ विश्व भारती: आचार्य श्री महाश्रमण

पनवेल, मुंबई।

२६ फरवरी, २०२४

महान यायावर आचार्य श्री महाश्रमण जी ने सह्याद्री पर्वतमाला पर स्थित तेरापंथ विश्व भारती परिसर में मंगल आशीर्वचन प्रदान करते हुए फरमाया कि धर्म सबसे बड़ा मंगल होता है। धर्म का सार है- अहिंसा, संयम और तप। यह धर्म परम मंगल है, उत्कृष्ट मंगल है। हमारे जीवन में ज्ञान, दर्शन, चारित्र्य, तप रूपी धर्म का विकास हो। हमारी आत्मा विकास की पराकाष्ठा प्राप्त होने तक आध्यात्मिक उन्नयन की दिशा में आगे बढ़ती रहे। धर्म की साधना व्यक्तिगत रूप में होती है, तो संगठन रूप में भी होती है। संगठन से पथदर्शन प्राप्त होता है, गुरु परंपरा प्राप्त होती है। गुरु के निर्देशन में, संरक्षण में धर्म साधना की जाती है तो वह अधिक बलवती बन सकती है। संगठन भी कई तरह के होते हैं- सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक। जैन शासन एक धार्मिक संगठन है, भगवान महावीर से संबंधित शासन है। जैन शासन में श्वेतांबर परम्परा



के अन्तर्गत हमारा तेरापंथ धर्मसंघ है। इस धर्मसंघ के जनक आद्य आचार्य श्री भिक्षु हुए हैं। हमारे धर्मसंघ में आचार्य परम्परा चल रही है, जिसका एक दशक पूर्ण हो गया है और दूसरा दशक प्रारंभ हो चुका है। पूर्ववर्ती पूजनीय आचार्यों ने दिशा निर्देश, नेतृत्व, संरक्षण, मार्गदर्शन दिया है। जहां नेतृत्व ठीक हो, अनुशासन, चिंतन, प्रतिभा, भाग्य का उदय भी हो तो विकास हो सकता है।

तेरापंथी महासभा के अन्तर्गत तेरापंथ

विश्व भारती का प्रकल्प है। तेरापंथ विश्व भारती नाम का विश्लेषण करवाते हुए आचार्य प्रवर ने फरमाया- तेरापंथ हमारा संगठन है, विश्व का एक अर्थ दुनिया और दूसरा अर्थ संपूर्ण और भारती का अर्थ विद्या होता है। अर्थात् जहां तेरापंथ की समग्र विद्याओं का अध्ययन हो, प्रशिक्षण, जानकारी दी जाए, ज्ञान किया जाए और भी कल्याणकारी गतिविधियां चले, वह तेरापंथ विश्व भारती है।

पूज्य प्रवर ने अनुकंपा वृष्टि करते

हुए फरमाया- 'तेरापंथ विश्व भारती की स्थापना हम आज करना चाहेंगे, उसके साथ मूल प्रोजेक्ट की स्थापना-क्रियान्विति के रूप में व इस परिसर की स्थापना हम आज ही करना चाहेंगे। आज २६ फरवरी २०२४ दोपहर २ बजकर २४ मिनट २६ सेकंड पर यह स्थापना मानी जाए।' पूज्य प्रवर ने मंगलपाठ के साथ तय समय पर तेरापंथ विश्व भारती के स्थापना की घोषणा की। आचार्य प्रवर ने आगे कहा कि मूल गतिविधि-शिक्षण

पनवेल, मुंबई में 26 फरवरी 2024 को दोपहर 2 बजकर 24 मिनट 26 सेकंड पर आचार्यश्री महाश्रमण जी के मुखारबिंद हुई तेरापंथ विश्व भारती की स्थापना

की बात है। पूज्यप्रवर ने आचार्य भिक्षु के दर्शन के निम्नोक्त पद्य का शिक्षण प्रदान करवाया :

जीव जीवे ते दया नहीं, मरे ते हिंसा मत जाण।

मारण वाला ने हिंसा कही, नहीं मारे ते दया गुण खान।।

अपने आयुष्य बल से कोई जीव जी रहा है, वह हमारी दया नहीं है। कई जीव मृत्यु को प्राप्त करते हैं वह हमारी हिंसा नहीं है। कोई मारता है तो वह हिंसा है। अपनी ओर से किसी को नहीं मारने का संकल्प-त्याग दया है। दया गुणों की खान है। (शेष पृष्ठ २ पर)

मुंबई स्तरीय मंगल भावना समारोह का पनवेल में हुआ आयोजन

साधना के द्वारा आत्मा को भावित करने का प्रयास करें : आचार्यश्री महाश्रमण

पनवेल, मुंबई।

२५ फरवरी, २०२४

विगत लगभग २५० दिनों से बृहत्तर मुंबई में अध्यात्म की गंगा बहाते हुए युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी आज पनवेल पधारे। मुंबई स्तरीय मंगल भावना समारोह में आचार्य श्री महाश्रमणजी ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि आत्मा अध्यात्म जगत का एक महत्वपूर्ण शब्द है। परमात्मा, महात्मा, सदात्मा और दुरात्मा आत्मा से संबंधित है। परमात्मा



तो सिद्ध भगवान हैं, अर्हंतों को भी एक अपेक्षा से परमात्मा कह सकते हैं। जो साधु पुरुष, संत-चारित्रवान होते हैं, वे

महात्मा हैं। जो गृहस्थ होते हुए भी अहिंसा, ईमानदारी, संयम आदि का पालन करते हैं, वे सदात्मा होते हैं। जो पाप कर्म करने

वाले, बुरे काम करने वाले, हत्या, झूठ, कपट, चोरी आदि में रचे-पचे रहने वाले हैं, वे दुरात्मा होते हैं।

परमात्मा, महात्मा तो वन्दनीय है। सदात्मा सम्माननीय होते हैं, कोई भी आत्मा दुरात्मा ना बनें। मानव जीवन हमें प्राप्त है, इस मानव जीवन का आध्यात्मिक लाभ उठाने का प्रयास करें। आत्मा के कल्याण की दृष्टि से बढ़िया उपयोग करें। शरीर अध्रुव, अशाश्वत और नाशवान है, धन-सम्पत्ति भी शाश्वत नहीं है, मृत्यु भी निकट आ रही है। हमें धर्म का संचय करना

चाहिए जो आगे भी काम आ सकेगा। हम भगवान महावीर के जैन शासन में भिक्षु स्वामी से जुड़े शासन में साधना कर रहे। आचार्य तो स्वयं का कल्याण करने वाले व दूसरों को सन्मार्ग बताने वाले होते हैं। आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत आन्दोलन शुरू किया था। आचार्य श्री महाप्रज्ञजी प्रेक्षाध्यान के प्रयोग कराते थे। हम साधना के द्वारा हमारी आत्मा को भावित करने का प्रयास करें। (शेष पृष्ठ २ पर)

ऑनलाईन पढ़ने के लिए
terapanthtimes.com

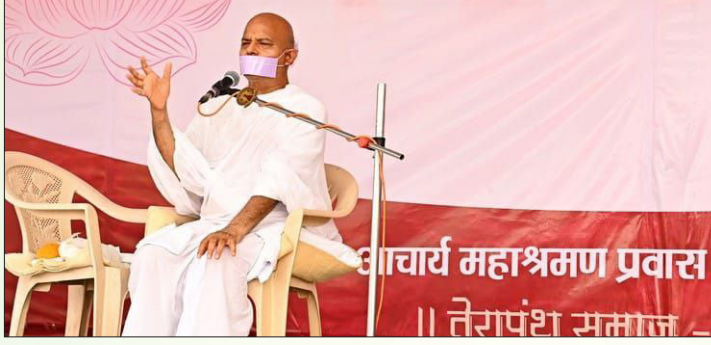
आत्म युद्ध से भीतर के कषायों को करें परास्त : आचार्यश्री महाश्रमण

खारघर, मुम्बई।

२३ फरवरी, २०२४

जन-जन के उद्धारक आचार्य श्री महाश्रमण जी आज प्रातः खारघर पधारे। मंगल पाथेय प्रदान कराते हुए आचार्यप्रवर ने फरमाया कि धर्मशास्त्र में आत्मयुद्ध की बात बतायी गई है। दुनिया में बाहर के युद्ध भी चलते हैं। वे युद्ध भी बाहर होने से पहले आदमी के दिमाग में होता है। युद्ध के भाव आते हैं, योजना बनती है, फिर वह समारंगण का रूप लेता है। अहिंसा व अपरिग्रह की ऐसी चेतना आदमी में रहे कि युद्ध को मौका ही न मिले।

युद्ध परिग्रह की चेतना या अन्य किसी कारण से हो सकता है। हम आत्म युद्ध की बात करें, स्वयं में जो दोष हैं, विकार हैं, विजातीय तत्त्व हैं उन्हें बाहर निकालने की चेष्टा करें। विजातीय तत्त्वों की जड़ें इतनी गहरी होती हैं कि उनको निकालना कठिन भी हो सकता है। धर्मयुद्ध-आत्मयुद्ध के द्वारा उन दोषों को बाहर निकालने का प्रयास किया जा सकता है। नौ तत्त्वों में संवर और निर्जरा, ये दो मानो युद्ध की सामग्री हैं। संवर के द्वारा अपनी सुरक्षा करना और निर्जरा- तपस्या के द्वारा पूर्वार्जित कर्मों को तोड़ना, मोहमय



संस्कारों को निर्वीर्य बनाना, कमजोर बनाना, कर्मों को क्षीण करना।

हमारा आत्मयुद्ध मुख्यतया मोहनीय कर्म के साथ होना चाहिये। यह हमारी चेतना को विकृत बनाने वाला होता है। क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष आदि ये सारी मोहनीय कर्म से होने वाली विकृतियां हैं। युद्ध करने के लिए शस्त्र की आवश्यकता भी होती है। मोहनीय कर्म के मूल चार अंग हैं- क्रोध, मान, माया, लोभ। इनसे युद्ध करने के उपाय इस प्रकार बताए गए हैं-

- गुस्से को जीतने के लिए उपशम की साधना की जाये।
- अहंकार को जीतने के लिए मार्दव का प्रयोग किया जाये।
- माया को जीतने के लिए आर्जव-

ऋजुता का अभ्यास किया जाये।

- लोभ को जीतने के लिए संतोष की साधना की जाये।

यह धर्म युद्ध है, यहां तो मैत्री और अहिंसा की बात है। युद्ध तो अपनी ही आत्मा के साथ करना है। हमारे तीर्थंकरों ने यह धर्म युद्ध किया था। भगवान महावीर ने लगभग १२.५ वर्षों तक एक विशेष साधना की, वह उनका आत्म युद्ध था और युद्ध करते-करते वैशाख शुक्ला दशमी का एक ऐसा दिन आया जब उन्हें इतनी बड़ी सफलता मिली कि मोहनीय कर्म पूर्णतया क्षीण हो गया। आठ कर्मों में सेनापति मोहनीय कर्म होता है। मोहनीय कर्म के जाने के बाद केवलज्ञान-केवलदर्शन की प्राप्ति हो गई।

साधु साधना करते हैं, पर गृहस्थ

भी जितना संभव हो उतना अध्यात्म की आराधना का अभ्यास करे। हमारा त्रि-सूत्री कार्यक्रम है- सद्भावना, नैतिकता और नशा मुक्ति। बहुत बड़ा आत्म युद्ध तो हर कोई कर पाए या नहीं पर इन सूत्रों को अपनाकर भी गृहस्थ अपना जीवन अच्छा बना सकते हैं। इनसे अपराध भी कम हो सकेंगे, स्वस्थ समाज का निर्माण हो सकता है, व्यक्ति-समाज-राष्ट्र-विश्व भी स्वस्थ हो सकते हैं। शरीर की स्वस्थता के साथ मन और भाव भी स्वस्थ रहें। आत्मयुद्ध अध्यात्म की साधना का उपाय है जिससे भीतर के कषायों को परास्त करने का प्रयास करें। विजातीय तत्त्वों से हमारी आत्मा मुक्त हो जाए।

हमारा परम लक्ष्य मोक्ष है उसके लिए आत्मा की शुद्धि जरूरी है। आवेश-आवेग हमारे भीतर नहीं उभरे। इस जन्म में ज्यादा से ज्यादा कषायों को दूर या कम करने का प्रयास हो। हमारा भीतर का प्रदूषण दूर हो, और एक दिन ऐसा आते कि हमारी चेतना पूर्णतया दोषमुक्त-विकारमुक्त हो जाए।

दुनिया का भाग्य है कि संत हमेशा दुनिया में रहते हैं। संतों से सन्मार्ग दर्शन मिलता है, ग्रंथों से ज्ञान प्राप्त होता है। हमारे शास्त्रों में कितनी ज्ञान की बातें

बतायी गयी है। धर्मयुद्ध-आत्मयुद्ध की बात भी आगमों में बतायी गयी है। हम परम सुख को पाने की दिशा में आगे बढ़े।

साध्वी प्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि हम जिस जगत में जी रहें हैं वह समस्या संकुल जगत है। सामाजिक, पारिवारिक, राजनीतिक, व्यवसायिक हर क्षेत्र समस्या से जूझ रहा है। समस्याओं को पैदा करने वाला व्यक्ति स्वयं होता है। हम समस्याओं को दूर करने का प्रयास करें। सम्यक् ज्ञान व सम्यक् दर्शन से हम समस्या को समाधान में बदल सकते हैं। जिस व्यक्ति को सम्यक् दर्शन प्राप्त हो जाता है, वह मोक्ष जाने का अधिकारी हो जाता है।

पूज्य प्रवर के स्वागत में सभा अध्यक्ष सुरेश पटवारी, धनंजय सोमानी, विधायक प्रशान्त ठाकुर ने अपनी अभिव्यक्ति दी। तेरापंथ महिला मंडल ने स्वागत गीत का संगान किया। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी भावपूर्ण प्रस्तुति दी। तेयुप के अध्यक्ष लोकेश चोरडिया एवं तेरापंथ किशोर मंडल ने पृथक पृथक गीत की प्रस्तुति दी। कन्या मंडल ने प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

प्रथम पृष्ठ का शेष

तेरापंथ की समग्र विद्या के शिक्षण-प्रशिक्षण का केंद्र है तेरापंथ विश्व भारती: आचार्य श्री महाश्रमण

आचार्य प्रवर ने आगे कहा कि जैन दर्शन के अनेक सिद्धांत हैं, उनको समझने का प्रयास करें। आचार्य भिक्षु का दर्शन अनेक ग्रन्थों में मिलता है। यहां भी शिक्षण-प्रशिक्षण, आध्यात्मिक- धार्मिक कार्य, संस्कार निर्माण शिविर, युवकों, बाइयों, उपासकों, अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान आदि के कार्यक्रम चलते रहें। हमारी सारी गतिविधियों मूल में तेरापंथ से जुड़ी हुई हैं। हम प्रभुमय बनने का प्रयास करें। अब चार विश्व भारती हो गई हैं- जैन विश्व भारती, अणुव्रत विश्व भारती, प्रेक्षा विश्व भारती और तेरापंथ विश्व भारती।

साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुत विभा जी ने कहा कि मर्यादा महोत्सव के बाद आज तेरापंथ विश्व भारती के उदय का उत्सव मनाया जा रहा है। जब गुरु की दृष्टि टिक जाती है, चाहे व्यक्ति पर टिके या क्षेत्र पर, वह आबाद हो जाता है। यह परिसर भी साधना करने वालों के लिए आश्रय स्थल बन सकेगा। यहां आने वाला हर व्यक्ति आचार्य भिक्षु के दर्शन को निकटता से समझ पाएगा।

मुख्यमुनि श्री महावीरकुमार जी ने कहा कि हमें प्रबल पुण्याई के धारक आचार्य श्री महाश्रमण जी का सान्निध्य प्राप्त है। हम पूज्य प्रवर का दीक्षा कल्याण वर्ष भी मना रहे हैं जिसका लक्ष्य आध्यात्मिक विकास रखा गया है। तेरापंथी महासभा का प्रकल्प तेरापंथ विश्व भारती तेरापंथ के विकास का हेतु बने।

साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशा जी ने कहा कि चीन की एक कहावत है कि ज्ञानी जब स्थिर होता है तो ऋषि बनता है, गतिशील होता है तो सम्राट बनता है। आचार्य श्री महाश्रमण एक ऐसे अलौकिक महापुरुष हैं जो स्थितप्रज्ञता और गतिशीलता का समन्वय हैं। तेरापंथ विश्व भारती की धरती पर आचार्य प्रवर के चरण टिके हैं। यहां आध्यात्मिकता और धार्मिक गतिविधियां साकार रूप प्राप्त करें।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में तेरापंथ विश्व भारती के ट्रस्टियों द्वारा आचार्य अभिवंदना की गई। महासभा अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया, महामंत्री विनोद बैद, कन्हैया लाल जैन पटवारी, तेरापंथ विश्व भारती मुंबई के संयोजक मदनलाल तातेड़, प्रेक्षा इंटरनेशनल के अध्यक्ष अरविंद

संचेती आदि ने विश्व भारती के विविध आयामों को जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन महासभा के महामंत्री विनोद बैद ने किया।

साधना के द्वारा आत्मा को भावित करने का प्रयास करें : आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्य प्रवर ने आगे कहा- हमारा बृहत्तर मुम्बई में अच्छा चतुर्मास, शेषकाल का अच्छा भ्रमण और प्रवास भी हो गया। अब चलते-चलते पनवेल आ गए हैं। अब आगे कोंकण क्षेत्र, पुणे, जालना, खान्देश आदि-आदि क्षेत्रों से होते हुए सूरत में अगला चतुर्मास है। अब मुम्बई से विदाई लेना है। यहां हमारा इतना बड़ा श्रावक समाज है। इतना बड़ा महानगर है। यहां का प्रवास अब सम्पन्नता की ओर है। कितने कितने लोग सम्पर्क में आए हैं। व्यवस्था समिति, क्षेत्रीय सभाएं, कार्यकर्ताओं आदि ने अपने अपने ढंग से सेवा दी है, प्रवास का लाभ उठाया है, श्रम और शक्ति का नियोजन किया है। वृहत्तर मुंबई के श्रावक-श्राविका समाज में धार्मिकता बनी रहे और धर्म संघ की धार्मिक आध्यात्मिक सेवा करते रहें। साध्वीप्रमुखा श्री जी ने फरमाया कि वे

व्यक्ति जीवन में धन्यता का अनुभव करते हैं जिन्हें गुरु का साक्षात् दर्शन उपलब्ध होता है, जिन्हें गुरुवाणी श्रवण करने का अवसर मिलता है, जो गुरु की उपसना में रहते हैं। मुंबईवासी इस माने में धन्य हैं कि उन्हें परमपूज्य आचार्य प्रवर के लंबे प्रवास का अवसर मिला। पूज्य प्रवर ने मुंबईवासियों को उन्मुक्त हाथों से समय तो दिया ही पर साथ में वो तत्त्व भी दिए जिनसे लोगों का आध्यात्मिक लक्ष्य स्पष्ट हुआ है। आचार्य प्रवर ने अपने प्रवचनों के माध्यम से जो अमृत धारा बहाई उसमें सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चारित्र का मिश्रण था। आचार्य प्रवर ने जो श्रम किया वह अनिर्वचनीय है। हम धन्य हैं कि हमें ऐसे गुरु मिले हैं जो हमें गंतव्य तक पहुंचाने वाले, मार्गदर्शन दिखाने वाले हैं।

मंगल प्रवचन के उपरान्त पनवेल के स्वागताध्यक्ष राजेन्द्र रांका, जतनलाल मेहता, सी.के.टी. कॉलेज ऑफ आर्ट, कॉमर्स एण्ड साइन्स के ऑनर ठाकुर परिवार की ओर से अर्चना ठाकुर ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। पनवेल की ओर से आचार्यश्री को नागरिक अभिनंदन पत्र को समर्पित किया गया। ज्ञानशाला

के ज्ञानार्थियों ने अपनी भावपूर्ण प्रस्तुति दी। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष बालचंद्र चोरडिया की ओर से संयोजक चतरलाल मेहता, तेयुप अध्यक्ष विमल बाफना व तेरापंथ महिला मण्डल की अध्यक्ष भारती बाफना ने अपनी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी। सुनिता बड़ाला ने ग्यारह की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। तेरापंथ किशोर मण्डल एवं तेरापंथ कन्या मण्डल ने अपनी प्रस्तुति दी। पनवेल महानगर के विपक्ष नेता प्रीतम म्हात्रे ने अपनी भावना अभिव्यक्ति की।

मंगल भावना समारोह में मुम्बई प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष मदनलाल तातेड़, आचार्यश्री के संसारपक्षीय भाई श्री सूरजकरण दूगड़ व श्री श्रीचंद दूगड़ ने अपनी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी।

तेरापंथ समाज-पनवेल व सूरत समाज ने अपनी-अपनी गीतों का संगान किया। आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में ध्वज हस्तांतरण के क्रम में मुम्बई प्रवास व्यवस्था समिति के पदाधिकारियों ने सूरत चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के पदाधिकारियों को ध्वज हस्तांतरित किया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।



१६०वें मर्यादा महोत्सव के विविध कार्यक्रम

सचिन, गुजरात

मर्यादा महोत्सव के कार्यक्रम में मुनि कुलदीपकुमार जी ने कहा- 'आचार्य भिक्षु ने अपने समय में साधु संस्था में व्याप्त शिथिलाचार के सामने विरोध का बिगुल फूका एवं संघ से पृथक होने का निर्णय लिया। उन्होंने संघ से अभिनिष्क्रमण कर दिया और अकेले चल पड़े। उनके मार्ग में अनेक संकट आए। पांच वर्ष तक तो पर्याप्त आहार पानी भी नहीं मिला। पन्द्रह वर्षों के बाद जब उन्होंने देखा कि उनके सिद्धांत लोगों में स्वीकृत होने लगे हैं, लोग उनके मार्ग का अनुसरण करने लगे हैं तब उनके मार्ग का अनुसरण करने लगे हैं तब उन्होंने संघ के सुचारु संचालन के लिए मर्यादाओं का निरूपण करना शुरू किया। आचार्य भिक्षु द्वारा प्रस्थापित मर्यादाओं का आज भी तेरापंथ धर्मसंघ में अक्षरशः पालन होता है। इन्हीं मर्यादाओं के आधार पर तेरापंथ धर्मसंघ विकास के नए-नए शिखरों पर पहुंच रहा है।

मुनि कुलदीपकुमार जी ने अपने सहवर्ती संत मुनि मुकुलकुमार जी की जन्मभूमि सचिन में उनके प्रति उद्गार व्यक्त करते हुए कहा- मुनि मुकुलकुमार जी अत्यंत विनम्र और विनीत संत हैं। उन्होंने धर्म ग्रंथों का अच्छा अध्ययन किया है। इनके संसारपक्षीय पिता राजमल कालिया धर्मसंघ के प्रति पूर्ण समर्पित श्रावक हैं। मैं उनके आध्यात्मिक विकास के लिए मंगल भावनाएं प्रेषित करता हूँ। यहां के जैन समाज ने जैन एकता का सुंदर उदाहरण प्रस्तुत किया है। सकल जैन समाज द्वारा मर्यादा महोत्सव का आज का आयोजन हुआ है, वह अपने आप में विशेष महत्वपूर्ण है।

मुनि मुकुल कुमार जी ने कहा- 'इतिहास इस बात का साक्षी है कि मर्यादाएं हमेशा व्यक्ति की सुरक्षा करती हैं। जब-जब मर्यादाओं की लक्ष्मण रेखा का उल्लंघन हुआ है, सुरक्षा भी समाप्त हुई है। मर्यादाओं का पालन उन्नति और विकास का राजपथ है।' उन्होंने कहा- 'मुनिश्री कुलदीप कुमार की निश्रा में रहकर मैंने बहुत कुछ सीखा है। उनका मुझ पर अप्रतिम वात्सल्य रहा है। उन्होंने मेरे संदर्भ में अनेक बातें बताई हैं, यह मुनिश्री की विशेष कृपा और प्रमोद भावना का ही द्योतक है।

अणुव्रत विश्व भारती के गुजरात प्रभारी अर्जुन मेड़तवाल, तेरापंथी सभा उधना के अध्यक्ष बसंतीलाल नाहर, तेरापंथी सभा सचिन के अध्यक्ष सुखलाल खमेसरा, स्थानकवासी समाज के अध्यक्ष

सागरमल बरलोटा, पीयूष ओस्तवाल, जीनल ओस्तवाल, तेरापंथी सभा सचिन के पूर्व अध्यक्ष राजमल काल्या आदि ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। विभिन्न सभा संस्थाओं ने गीत, वक्तव्य तथा परिसंवाद द्वारा रोचक प्रस्तुति दी। मंगलाचरण तेरापंथ महिला मंडल सचिन ने एवं आभार ज्ञापन पिंटू मुणोत ने किया। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथी सभा उधना के उपाध्यक्ष मुकेश बाबेल ने किया।

हुबली

साध्वी संयमलता जी एवं साध्वी उदितयशा जी के सान्निध्य में उत्तर कर्नाटक स्तरीय मर्यादा महोत्सव के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। साध्वी संयमलता जी ने अपने वक्तव्य में फरमाया कि तेरापंथ धर्मसंघ में आज्ञा ही तप है, आज्ञा ही संयम है। इस संघ में गुरु आज्ञा के बिना एक पत्ता भी नहीं हिल सकता। साध्वीश्री ने कहा कि मर्यादा वह है जो बिखराव को समेटती है, जो अनुशासनहीनता पर अंकुश लगाती है, जो शक्तियों को सही दिशा प्रदान करती है, जो अनुशासन से जीवन को संवारती है। संघ-संगठन के संदर्भ में जहां इच्छाओं का समर्पण सामुदायिक चेतना का विकास हो, उसे हम मर्यादा कहते हैं। मर्यादा और अनुशासन ही तेरापंथ धर्मसंघ का प्राण है। साध्वी उदितयशा जी ने कहा मर्यादा के निर्माता, मर्यादाएं और मर्यादाओं का पालन करने वाले, इन तीनों में मर्यादाओं का पालन करने वालों का महत्वपूर्ण स्थान है। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीवृंद ने मर्यादा गीत के संगान से की। 'तेरापंथ की कहानी साध्वी वृंद की जुबानी' की प्रस्तुति साध्वी मनीषाप्रभा, साध्वी भव्ययशा, साध्वी रौनकप्रभा और साध्वी शिक्षाप्रभा ने प्रस्तुत किया।

साध्वी संगीतप्रभा ने आचार्य भिक्षु के प्रति भावपूर्ण अभिव्यक्ति दी। तेरापंथ युवक परिषद के सदस्यों ने ओजस्वी स्वरों के साथ गीत का मंगल संगान किया। साध्वी वृंद ने सुमधुर गीतिका से वातावरण को संगीतमय बना दिया। उत्तर कर्नाटक और हुबली से समागत श्रावक श्राविकाओं का स्वागत करते हुए हुबली तेरापंथी सभा के अध्यक्ष अमोलकचंद बागरेचा ने अपने भावों को व्यक्त किया। तेरापंथी सभा के मंत्री केसरीचंद गोलेछा ने वासुपूज्य भवन के ट्रस्ट मंडल का आभार एवं सम्मान किया। तेरापंथ युवक परिषद हुबली के अध्यक्ष विशाल बोहरा ने गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते

हुए सभी कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी मारदवश्री जी ने किया।

सरदारपुरा

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के महत्वपूर्ण पर्व मर्यादा महोत्सव का आयोजन शहर के सरदारपुरा स्थित मेघराज तातेड़ भवन में किया गया। शासनश्री साध्वी कमलप्रभा जी, साध्वी गुप्तिप्रभा जी, साध्वी कुंदनप्रभा जी के सान्निध्य में आयोजित हुए इस कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री के द्वारा नमस्कार महामंत्र के सम्मुच्चारण से हुआ। कार्यक्रम का मंगलाचरण कवि जैन ने सुंदर गीतिका के माध्यम से किया। साध्वी कुसुमलता ने मर्यादा के महत्व को उजागर करते हुये गीत का संगान किया। साध्वी जगतयशा जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि मर्यादा, अनुशासन और समर्पण तेरापंथ धर्मसंघ की पहचान है। साध्वी विद्युतप्रभा जी ने कहा कि आचार्यश्री भिक्षु ने मर्यादाओं का निर्माण किया और उन्हीं मर्यादाओं को महोत्सव का रूप देने वाले चतुर्थ आचार्य जीतमल जी थे।

आचार्यश्री भिक्षु ने दूरदर्शी चिंतन कर धर्मसंघ का संविधान लिखा, उसी का परिणाम है आज भी एक गुरु की आज्ञा सर्वोपरि है। साध्वीवृन्द ने सामूहिक गीतिका 'जय मर्यादा जय शासन, जय मर्यादा जय अनुशासन' का संगान किया। साध्वी गुप्तिप्रभा जी ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा कि आचार्य भिक्षु का सपना था सत्य का साक्षात्कार करना और संकल्प था जिनवाणी के प्रति अपनी आस्था को समर्पित करना। आचार्य भिक्षु के पुरुषार्थ ने जो लिखा उसी का परिणाम यह मर्यादा महोत्सव है। उनके साहस और पुरुषार्थ की फलश्रुति है यह अनुशासित और मर्यादित धर्मसंघ।

शासनश्री साध्वी कमलप्रभा जी ने कहा कि मर्यादाओं के निर्माता आचार्य भिक्षु थे और मर्यादा के सतत संचालक वर्तमान आचार्यश्री महाश्रमण जी हैं। आचार्यश्री भिक्षु लौह पुरुष थे, जिन्होंने ऐसा मजबूत और पावन संविधान लिखा, जिसकी सुदृढ नींव पर यह तेरापंथ धर्मसंघ का विशाल भवन खड़ा है। ऐसा धर्मसंघ जिसकी दुनिया में अपनी विलक्षण पहचान है, जिसकी श्रद्धा, सेवा, समर्पण का त्रिवेणी संगम अद्वितीय है। कार्यक्रम में तेरापंथी सभा अध्यक्ष सुरेश जीरावला, महिला मंडल अध्यक्षा दिलखुश तातेड़, नैनमल तातेड़, रीना सिंघवी ने वक्तव्य द्वारा अपने

भावों की प्रस्तुति दी। तेरापंथ महिला मंडल सरदारपुरा तथा तेरापंथ युवक परिषद सरदारपुरा द्वारा गीतिका का संगान किया गया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी मौलिकयशा जी व साध्वी भावितयशा जी ने किया। सामूहिक संघ गान के संगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

कूच बिहार, बंगाल

मुनिश्री प्रशांतकुमार जी एवं मुनिश्री कुमुदकुमार जी के सान्निध्य में १६०वें मर्यादा महोत्सव का आयोजन हुआ। जनसभा को संबोधित करते हुए मुनिश्री प्रशांतकुमार जी ने कहा- 'पूरी दुनिया में एकमात्र तेरापंथ धर्मसंघ है जो मर्यादाओं का महोत्सव मनाता है। आज एक ओर जहां हर क्षेत्र में अनुशासन और मर्यादा भंग हो रही है, वहीं तेरापंथ धर्मसंघ मर्यादा पालन में अपनी कटिबद्धता प्रदर्शित करते हुए गरिमापूर्ण ढंग से मर्यादाओं का सम्मान करता है। अनुशासन ही तेरापंथ का मूल मंत्र है। जैन आगमों के अनुसार मुनि चर्या का पालन करते हुए तेरापंथ धर्मसंघ के साधु-साधवियों ने विकास के अनेक नए आयाम खोले हैं। इसका मूल आधार है एक गुरु का अनुशासन। आचार्य भिक्षु आत्म साधना के लिए पूर्णतया समर्पित थे। इस मार्ग में आने वाली बाधाओं, कष्टों को झेलना उन्हें मंजूर था लेकिन सत्य की जो राह पकड़ी उससे हटना स्वीकार नहीं था। आचार्यश्री भिक्षु ने मर्यादाओं को किसी पर थोपा नहीं, सबकी सहर्ष स्वीकृति होने के बाद ही इन मर्यादाओं को संघ में लागू किया। तेरापंथ धर्मसंघ में सेवा को भी अत्यधिक महत्व दिया गया। शारीरिक दृष्टि से अक्षम अथवा बीमार, वृद्ध साधु साध्वी की सेवा की व्यवस्था यहां बेजोड़ है, जो इस संघ को महानता के शिखर पर पहुंचने वाली है।

मुनि कुमुदकुमार जी ने कहा- अनुशासन और मर्यादा का पालन ही मर्यादा का सबसे बड़ा सम्मान है। तेरापंथ संघ में अनुशासन को सर्वोपरि महत्व दिया गया। लगभग 260 वर्ष पूर्व आचार्य भिक्षु ने जो मर्यादाएं बनाई, उनमें आज तक कोई परिवर्तन नहीं हुआ और उनका पालन करने को पूरा संघ तत्पर रहता है। तेरापंथ संघ में अहंकार और ममकार विसर्जन की जन्म घुट्टी मिलती है। यही वजह है कि शिष्य-शिष्या बनाने की होड़ से मुक्त होकर तेरापंथ धर्म संघ साधना की गहराई और विकास के शिखरों को छूने में सफल रहा है। जहां अनुशासन और मर्यादा निष्ठा होती है वही

शुद्ध साधना हो सकती है। आचार्यश्री का निर्णय एवं उनकी दृष्टि ही सर्वोपरि होते हैं। हाजरी वाचन के पश्चात् दोनों संतों ने खड़े होकर लेखपत्र का उच्चारण किया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन राजकुमार बोधरा ने किया। तेरापंथ महिला मंडल के मंगलाचरण से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। स्वागत वक्तव्य तेरापंथी सभा अध्यक्ष राजेंद्र नौलखा ने दिया। आभार ज्ञापन प्रदीप दुगाड़ ने किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि कुमुदकुमार जी ने किया।

सिटीलाइट, सूरत

१६०वें मर्यादा महोत्सव समारोह को संबोधित करते हुए मुनि उदितकुमार जी ने कहा- 'तेरापंथ धर्मसंघ एक प्राणवान, अनुशासित एवं सुसंगठित धर्मसंघ है। यह स्वस्थ भी इसलिए है कि यहां साधु-साध्वी मर्यादा पालन में पूर्ण रूप से सजग हैं। एक आचार, एक विचार, एक प्ररूपणा। एक आचार्य के निर्देशन में चलने वाला यह हमारा धर्मसंघ सबके लिए प्रेरणा स्रोत इसीलिए बना हुआ है कि इसके माध्यम से सबको आचारनिष्ठा, श्रद्धा एवं समर्पण की शिक्षा मिल रही है। युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के नेतृत्व में तेरापंथ धर्मसंघ कितनी अच्छी प्रगति कर रहा है। सन् २०२४ में आचार्य प्रवर का चातुर्मास सूरत में हो रहा है। इस संदर्भ में मुनिश्री ने श्रावक समाज को विशेष बलवती प्रेरणा प्रदान की। कार्यक्रम में शासनश्री साध्वी चंदनबाला जी की ओर से साध्वी राजश्री जी, शासनश्री साध्वी मधुबाला जी की ओर से साध्वी मंजुलयशा जी, साध्वी त्रिशला कुमारी जी की ओर से साध्वी कल्पयशा जी तथा साध्वी हिमश्री जी और साध्वी सम्यकप्रभा जी ने तेरापंथ की मर्यादा व्यवस्था आदि के संदर्भ में प्रेरक विचार प्रस्तुत किए। मुनि ज्योतिर्मय जी ने कविता प्रस्तुत की। मुनि अनंत कुमार जी एवं मुनि पारस कुमार जी के प्रासंगिक वक्तव्य हुए।

कार्यक्रम का प्रारंभ मर्यादा गीत से हुआ। तेरापंथ कन्या मंडल ने महाश्रमण अष्टकम् प्रस्तुत किया। आचार्यश्री महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति, सूरत के अध्यक्ष संजय सुराणा, तेरापंथी सभा सूरत, उधना के पदाधिकारीगण ने अपने भाव व्यक्त किए। सूरत श्रावक समाज ने सुंदर समूह गीत प्रस्तुत किया। चीफ ट्रस्टी बाबूलाल भोगर ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। संघगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। कार्यक्रम का संचालन मुनि रम्यकुमार जी ने किया।



१६०वें मर्यादा महोत्सव के विविध कार्यक्रम

नाभा

साध्वी कनकरेखा जी के सान्निध्य में १६०वाँ मर्यादा महोत्सव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री जी के मर्यादा संगान की सरगम स्वरलहरी के साथ हुआ। साध्वी कनकरेखा जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु ने आचार शिथिलता के विरुद्ध जो धर्मक्रांति की, उसका आधार है मर्यादा। यह संगठन और अनुशासन का एक दस्तावेज है। तेरापंथ धर्मसंघ एक आचार, एक विचार एवं एक आचार्य की कुशल अनुशासना का खिला हुआ चमन है, जिसकी सौरभ से देश-विदेश की धरती भी सुरभित हो रही है। लोकतंत्र में एकतंत्र की मर्यादा का रक्षा कवच कहीं हम देख रहे हैं वह है तेरापंथ धर्मसंघ।

महिला मंडल, कन्या मंडल, ज्ञानशाला, सभा, परिषद ने रोचक प्रस्तुति दी। अतिथियों का स्वागत करते हुए सभा के प्रधान राजेश गुप्ता व महिला मंडल से अरुणा जैन ने अपने विचार रखे। पंजाब समिति सभाध्यक्ष केवल कृष्ण गोयल ने अपने विचार रखे।

साध्वी गुणप्रेक्षाजी, साध्वी संवरविभा जी, साध्वी केवलप्रभा जी व साध्वी हेमंतप्रभा जी ने अपने विचार प्रस्तुत किए। मंचासीन अतिथियों का सम्मान किया गया। सुनाम महिला मंडल ने गीत की प्रस्तुति दी।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि गुरुदेव सिंह देवमान विधायक नाभा, विशिष्ट अतिथि नगर प्रधान कौसल सुजाता चावला नाभा, पार्षद रोजी नागपाल, पूर्व चेयरमैन इंफ्रामेंट ट्रस्ट डॉ० ओमप्रकाश डल्ला उपस्थित थे। संचालन विनोद फलेर ने किया।

फरीदाबाद

साध्वी संगीतश्री जी के सान्निध्य में मर्यादा महोत्सव कार्यक्रम फरीदाबाद के राजस्थान भवन में मनाया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ साध्वीश्री के मंगल गीत से हुआ। साध्वी संगीतश्री जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ का महाकुंभ मेला है मर्यादा महोत्सव। आचार्य भिक्षु ने संवत् 1859, शनिवार माघ शुक्ला सप्तमी को अंतिम मर्यादा पत्र लिखा। यही मर्यादा पत्र संघ की एकता व अखंडता का एक छत्र है।

वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमण जी संघ की सारणा-वारणा कर रहे हैं, एक आचार, एक विचार का बोध सिखा रहे हैं।

साध्वी शांतिप्रभा जी, साध्वी कमलविभा जी, साध्वी मुदिताजी ने मर्यादा महोत्सव के पर्व को महान बताते हुए परस्पर सौहार्द, संविभाग, अनुशासन एवं संगठन का महत्त्व बताया व कहा कि हमें गौरव है, हमें ऐसा मर्यादित संघ मिला, ऐसे महान गुरु मिले जो हमारी सार-संभाल कर रहे हैं। इसी क्रम में स्थानीय सभा अध्यक्ष गुलाबचंद बैद, तेयुप अध्यक्ष गौतम गोलछा, महिला मंडल अध्यक्ष ललित बैद, टीपीएफ अध्यक्ष राकेश सेठिया, अणुव्रत समिति, मंजू लूणिया, कानपुर से समागत सभा अध्यक्ष संदीप जम्मड़, अंशु जम्मड़ ने विचारों की अभिव्यक्ति दी। आभार व्यक्त संजय दुगड़ ने किया। कार्यक्रम का संचालन विनीत बैद ने किया।

लातूर

अनुशासन और मर्यादा का पथ फूलों से नहीं कांटों से भरा है। उस पथ से गुजर जाने के बाद हर कांटा फूल बनकर मुस्कुरा उठता है। नये सृजन की प्रतीक्षा का नाम है-मर्यादा। जो अनुशासन में नहीं रह सकता वो कभी भी स्वतंत्र नहीं हो सकता। मर्यादा का अस्वीकार जीवन की पहली हार है। मर्यादा का तिरस्कार जीवन को बेकार बना देता है। यह विचार मुनि अर्हतकुमार जी ने मर्यादा महोत्सव कार्यक्रम पर व्यक्त किये। मुनिश्री ने बताया कि आर्य भिक्षु ने मर्यादाओं का सूत्रपात किया।

पूर्ववर्ती आचार्यों ने अपने खून-पसीने से इस धर्म संघ को सींचा व जयाचार्य ने इसे महोत्सव का रूप दिया। तेरापंथ धर्म संघ में मुख्य पांच मर्यादाएँ हैं जिन्होंने संघ की नींव को गहरी बनाया है। मुनि भरत कुमार जी ने बताया कि आर्य भिक्षु ने मर्यादा का सुन्दर कवच बना कर तेरापंथ धर्म संघ को सुदृढ़ बना दिया। लोग सोचते हैं कि मर्यादा ने हमारी आजादी को हमसे छीन लिया और हमें बन्धन में डाल दिया, पर वे समझ नहीं पाते हैं कि मर्यादा ही हमारी सफलता की पहली सीढ़ी है।

अनुशासन जीवन को संवारने और निखारने वाला तत्त्व है। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित सोलापुर विद्यापीठ के पूर्व कुलगुरु डॉ० देवेन्द्र नाथ मिश्रा व आचार्यश्री महाश्रमण अक्षय तृतीया प्रवास समिति, औरंगाबाद के अध्यक्ष सुभाष नाहर ने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन मुनि जयदीपकुमार जी ने किया।

चंडीगढ़

जीवन का पड़ाव चाहे संसार हो या संन्यास, सीमा, संयम एवं मर्यादा जरूरी है। मर्यादा जीवन का पर्याय है। मर्यादा महोत्सव दुनिया का अनूठा उत्सव है। तेरापंथ की गतिविधियों का नाभि केंद्र है। मर्यादा महोत्सव का केंद्रीय विराट आयोजन संघ के अधिशास्ता की पावन सन्निधि में समायोजित होता है। किसी भी धर्मगुरु, संगठन, संस्था या संघ की मजबूती का प्रमुख आधार है मर्यादा। साधु-साध्वियों एवं समण-समणियों की सारणा-वारणा, सार-संभाल का समय है यह महोत्सव। यह विचार मुनि विनय कुमार जी 'आलोक' ने १६०वें मर्यादा महोत्सव पर व्यक्त किए। कार्यक्रम में तेरापंथ सभा के मंत्री सुधीर जैन, विजय गोयल, राजेश प्रसाद जैन, महिला मंडल की अध्यक्षा शांता चोपड़ा आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम की शुरुआत प्रज्ञा गीत से हुई, संचालन अणुव्रत समिति मंत्री प्रदीप जैन ने किया।

दिल्ली

तेरापंथ धर्मसंघ का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम मर्यादा महोत्सव का दिल्ली स्तरीय कार्यक्रम 'शासनश्री' साध्वी संघमित्रा जी की पावन प्रेरणा से रोहिणी तेरापंथ भवन में आयोजित हुआ। इस अवसर पर उपस्थित श्रावक समाज को संबोधित करते हुए शासनश्री साध्वी ललितप्रभा जी ने तेरापंथ की मौलिक मर्यादाओं की व्याख्या की। उन्होंने इन मर्यादाओं को तेरापंथ के विकास का आधार बताया। मंगलाचरण तेममं, उत्तरी दिल्ली, पश्चिमी दिल्ली और मध्य दिल्ली की बहनों ने किया। महाश्रमण अष्टकम का उच्चारण तेरापंथ कन्या मंडल द्वारा किया गया।

रोहिणी तेरापंथ सभा के अध्यक्ष विजय जैन ने आगत सभी श्रावक-श्राविकाओं का स्वागत किया। युवती मंडल व कन्या मंडल द्वारा प्रासंगिक नाटिका प्रस्तुत की गई, जिनका मार्गदर्शन साध्वी डॉ० सूरजयशा जी ने किया था। विभिन्न संघीय संस्थाओं महिला मंडल, उत्तरी दिल्ली की अध्यक्षा मधु सेठिया, तेयुप के अध्यक्ष विकास चोरड़िया, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष मनोज बरमेचा, रोहिणी सभा के कोषाध्यक्ष पराग जैन आदि ने अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए भगवान महावीर मेमोरियल समिति

के अध्यक्ष शासनसेवी कन्हैयालाल जैन पटावरी ने मर्यादा को जीवन में विकास का आधार बताया। साथियों ने सांस्कृतिक प्रभारी ललित श्यामसुखा और जयसिंह दुगड़ के निर्देशन में शासनश्री साध्वी शीलप्रभा जी द्वारा रचित गीत को स्वर दिया। साध्वीवृंद ने सुमधुर गीत का संगान किया। 'शासनश्री' साध्वी शीलप्रभा जी ने सारगर्भित वक्तव्य दिया। दिल्ली सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संयोजन दिल्ली सभा के महामंत्री प्रमोद घोड़ावत ने किया। आभार ज्ञापन रोहिणी सभा के मंत्री राजेंद्र सिंघी ने किया।

चंगड़ाबांधा

साध्वी स्वर्णरेखा जी के सान्निध्य में मर्यादा महोत्सव का आयोजन किया गया। साध्वीश्री जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ में जीने वाला जीवन को

अनुशासित एवं मर्यादित बना सकता है, क्योंकि यहाँ मर्यादा-अनुशासन जन्मघुड़ी के रूप में मिली हुई है। तेरापंथ के प्रथम आचार्य, चतुर्थ आचार्य कोई साधारण आचार्य नहीं थे, भिन्न-भिन्न मति वालों को भिन्न-भिन्न गति वालों को मर्यादा के खूंट से बाँध दिया। इस अवसर पर साध्वी सुधांशुप्रभा जी ने अपने विचार रखे। स्थानीय तेयुप, महिला मंडल ने अपनी भिन्न-भिन्न प्रस्तुतियाँ दी। सभाध्यक्ष अरुण आंचलिया, गुवाहाटी सभाध्यक्ष बजरंग कुमार सुराणा, सिलीगुड़ी सभाध्यक्ष रूपचंद कोठारी, बंगाल आंचलिक ज्ञानशाला प्रभारी लक्ष्मीपत गोलछा आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। सिलीगुड़ी सभाध्यक्ष ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। कार्यक्रम का प्रारंभ प्रियंका बुच्चा के मंगल संगान से हुआ। कार्यक्रम का संचालन महिला मंडल अध्यक्ष वीणा सुराणा ने किया।

पृष्ठ १२ का शेष

शक्ति का विवेक के साथ हो सदुपयोग: आचार्यश्री महाश्रमण

दुर्जन आदमी शक्ति का दुरुपयोग कर लेता है, सज्जन आदमी शक्ति का सदुपयोग करता है। दुर्जन के पास विद्या है तो वह उसका विवाद में दुरुपयोग करता है। सज्जन के पास विद्या है तो वह उसे दूसरों को बांटने में, अच्छा कार्य करने में या संवाद करने में उपयोग कर लेता है। दुर्जन आदमी का धन मद का कारण भी बन जाता है। दुर्जन अहंकार से धन का दुरुपयोग करता है। सज्जन धन का उपयोग दान में, सद्कार्य में करता है। सबल होना एक उपलब्धि है पर उसके उपयोग का विवेक होना चाहिए। अच्छे कार्यों में शक्ति को लगाओ। दुनिया में कमजोर-निर्बल होना मानो अभिशाप है, शक्तिशाली होना अच्छी बात हो सकती है पर उस शक्ति का सदुपयोग हो। शक्ति का उपयोग पाप कर्म करने में नहीं हो। ताकत होने पर भी संयम रखें, विद्या होने पर भी मौन रखें, प्रदर्शन, दिखावा न करें, शक्ति होने पर भी क्षमा का भाव रखें, दान करके प्रशंसा पाने का प्रयास न करें, निष्काम भाव से दान करें। शक्ति का विकास जितना अपेक्षित हो उतना विकास भी किया जा सकता है। परंतु प्रतिकूल स्थिति आए तो उसमें समभाव रखना चाहिए। भगवान महावीर में कितना बल था। उनका शरीर वज्र ऋषभनाराच संहनन का था। १२.५ वर्षों तक उन्होंने कितने उपसर्गों को सहन किया था। हम भी मन के प्रतिकूल परिस्थितियों को सहन करने का प्रयास करें। हमारे पूर्वाचार्यों आचार्य भिक्षु, आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ जी के जीवन को हम देखें, उनमें ज्ञान का बल, प्रतिभा, शरीर का बल आदि का साक्षात्कार होता है। आदमी यह ध्यान रखे कि मैं बल का दुरुपयोग करने से बचूँ।

सभी संयम का बल रखें, अहिंसा भी बलवती हो। डरपोक होकर नहीं, निर्भीक होकर अहिंसा की साधना करें। हम अपनी शक्तियों का दुरुपयोग करने से बचने का प्रयास करें, जितना हो सके सदुपयोग करने का प्रयास करें। आचार्य प्रवर ने अणुव्रत गीत के आंशिक संगान के साथ संयम और अहिंसा की प्रेरणा दी।

मुख्य प्रवचन के पश्चात पूज्य प्रवर की सन्निधि में जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित एवं साध्वी वीरप्रभाजी द्वारा लिखित पुस्तक 'Theory of Numbers in Jain Agam' का लोकार्पण किया गया। साध्वी वीरप्रभाजी ने पुस्तक के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किए। साध्वी स्तुतिप्रभाजी ने गीत का संगान किया। वाशी सभाध्यक्ष विनोद बाफना, नीरज बंब, तेयुप अध्यक्ष महावीर सोनी, मंत्री अरविंद खांटेड ने अपनी भावना असिव्यक्त की। तेरापंथ महिला मंडल ने गीत की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।



संक्षिप्त खबर

भाई बहन का आध्यात्मिक मिलन समारोह

दादर। 'उग्रविहारी तपोमूर्ति' मुनि कमलकुमार जी और 'शासनश्री' साध्वी सोमलताजी का लंबे समय के बाद आध्यात्मिक मिलन हुआ। साध्वी सोमलता जी लंबे समय से स्वास्थ्य लाभ हेतु मुंबई में विराजमान हैं। मुनि कमलकुमार जी दिल्ली से विहार कर मुंबई पधारे और पूज्य आचार्य प्रवर के दर्शन किये। उसी दिन पूज्य प्रवर ने स्वयमेव फरमाया कि हमसे तो मिलन हो गया है आप साध्वी सोमलता जी को एक बार जल्दी दर्शन देवें। मुनिश्री गुरु आज्ञा को शिरोधार्य कर उसी दिन लंबा विहार करके दादर पधारे। साध्वीश्री को जब संवाद मिला कि मुनिश्री आज ही आपको दर्शन देने के लिए गुरुवर व साध्वी प्रमुखाश्री का संदेश लेकर आ रहे हैं तो साध्वीश्री के रोम-रोम में हर्ष-उल्लास का ज्वार उमड़ने लगा और साध्वीश्री ने अस्वस्थता काल में भी एक मधुर गीत बना दिया। दादर के लोगों को पता लगते ही भवन में श्रावक-श्राविकाओं का तांता लग गया। मुनिश्री ने पूज्यप्रवर से मंगल पाठ श्रवण कर दोपहर की धूप में २३ कि.मी. पधार कर ही विश्राम लिया। साध्वीश्री ने अपनी सहयोगी साध्वियों के साथ सामूहिक गीत का संगान कर परिषद् को गदगद कर दिया। मुनिश्री ने गीत का संगान कर पूज्यप्रवर का संदेश साध्वीश्री को भेंट किया। साध्वीश्री ने उन संदेशों को पढ़कर अपने भाग्य की सराहना की।

मेधावी विद्यार्थी सम्मान समारोह

भीलवाड़ा। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, भीलवाड़ा द्वारा मेधावी विद्यार्थी सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। सचिव सपना कोठारी ने बताया कि इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य तेरापंथ समाज की उन प्रतिभाओं का सम्मान करना है, जिन्होंने देश भर में अपना नाम तो रोशन किया है साथ ही परिवार और समाज का नाम भी रोशन किया है। अध्यक्ष प्रशांत सिंघवी ने सभी का स्वागत करते हुए सभी बच्चों को आगे बढ़ने की प्रेरणा दी और सभी को सर्टिफिकेट व मेडल के साथ सम्मानित किया। तेरापंथी सभा अध्यक्ष जसराज चोरडिया ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इस कार्यक्रम में लगभग ४० बच्चों का सम्मान किया गया। ग्रीन वैली स्कूल के डायरेक्टर भाटिया जी ने भी बच्चों को प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम में अणुव्रत समिति, तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद के अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्य मौजूद थे।

अणुव्रत आन्दोलन का अमृत महोत्सव

विल्लुपुरम, चेन्नई। श्री सुसवाणी माता ट्रस्ट भवन में उपस्थित धर्म परिषद् को साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी ने सकारात्मक विचार सम्पन्न बनने की प्रबल प्रेरणा दी। साध्वीश्री ने कहा कि व्यक्ति को अपने दिल और दिमाग को खुला रखना चाहिए। अहिंसक जीवन शैली को अपनाते हुए अपनी सुख-सुविधाओं में अतिभोगी नहीं बनें। अणुव्रत आन्दोलन के ७५वें वर्ष पर आयोजित अमृत महोत्सव वर्ष को परिलक्षित करते हुए साध्वीश्री ने कहा कि गणाधिपति पूज्य गुरुदेव तुलसी ने हमें अणुव्रत का अवदान दिया। हम अणुव्रत को अपनाते हुए हिंसा के अल्पीकरण के साथ पर्यावरण संरक्षण में सहभागी बनें। नमस्कार महामंत्र और अणुव्रत संगान से प्रारंभ कार्यक्रम में कथानक के माध्यम से साध्वीश्री ने विशेष पाठ्य प्रदान किया कि ईश्यावान व्यक्ति दूसरों से पहले स्वयं अपना ही अहित कर लेता है, अतः माइंड को ब्रॉड रखें। सबके साथ हिल-मिल कर रहें। साध्वी मेरुप्रभा जी, साध्वी मंयकप्रभा जी, साध्वी दक्षप्रभा जी ने भी परिषद् को सम्बोधित किया। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ ट्रस्ट, माधावरम् के प्रबंध न्यासी घीसूलाल बोहरा, तेयुप अध्यक्ष दिलीप गेलड़ा, सहमंत्री नवीन बोहरा, अणुव्रत समिति मंत्री स्वरूपचन्द दाँती ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। विल्लुपुरम से सुशील सुराणा ने अतिथियों का स्वागत करते हुए आभार व्यक्त किया।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि-अमूल्य निधि



नामकरण संस्कार

■ **पूर्वांचल कोलकाता।** तारानगर निवासी, पूर्वांचल-कोलकाता प्रवासी श्रेयांस दुगड़ एवं प्रियंका दुगड़ के पुत्र का नामकरण जैन संस्कार विधि से जैन संस्कारक सुरेंद्र सेठिया ने विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया। पूर्वांचल-कोलकाता के कोषाध्यक्ष हर्ष सिरोहिया ने दुगड़ परिवार के प्रति आभार प्रकट किया। तेयुप की ओर से दुगड़ परिवार को मंगलभावना पत्रक और नामकरण पत्र प्रदान किया गया।

■ **साउथ हावड़ा।** सरदारशहर निवासी, उत्तर कोलकाता प्रवासी मयूर-रश्मि बरडिया की सुपुत्री का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक बीरेंद्र सेठिया एवं गगनदीप बैद ने विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया।

पाणिग्रहण संस्कार

■ **पूर्वांचल कोलकाता।** मोमासर निवासी, बांगुर कोलकाता प्रवासी, पवन कुमार संचेती के सुपुत्र मोहित संचेती का शुभ पाणिग्रहण संस्कार मॉस्को निवासी बुशरा एडुदाओ के संग जैन संस्कार विधि से जैन संस्कारक सुरेंद्र सेठिया, विजय राज बरमेचा एवं अनूप गंग ने संपूर्ण विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया। तेयुप, पूर्वांचल के उपाध्यक्ष-प्रथम धनपत बरडिया एवं सहमंत्री-द्वितीय लोकेश दुगड़ ने मंगलभावना पत्रक प्रदान किया एवं शुभकामनाएँ प्रेषित की।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

■ **राजाजीनगर।** प्रदीप-पंकज सुराणा के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक राजेश देरासरिया एवं रनीत कोठारी ने विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया। परिषद द्वारा सुराणा परिवार को मंगलभावना यंत्र भेंट किया गया।

■ **नालासोपारा (मुंबई)।** नालासोपारा निवासी बोरज प्रवासी पारसमल गुंदेचा के सुपुत्र मनीष गुंदेचा के नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक पारस बाफना व अरविंद धाकड़ ने विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया। पारिवारिकजनों को मंगलभावना भेंट दिया गया। पारसमल बुंदेचा द्वारा तेयुप के प्रति आभार व्यक्त किया गया।

ज्ञानशाला ज्ञानार्थी परीक्षा-2023 के परिणाम घोषित

सिकंदराबाद।

तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद के संचालकत्व में नगर त्रय में २३ ज्ञानशालाओं का व्यवस्थित संचालन हो रहा है। हैदराबाद में महासभा प्रकोष्ठ के निर्देशानुसार ज्ञानशाला पाठ्यक्रम के शिशु संस्कार भाग-१ से लेकर भाग-५ तक की परीक्षा नगर त्रय में ६ केंद्रों पर आयोजित की गई। जिसमें सभी ज्ञानशालाओं के लगभग २५० बच्चों ने मौखिक परीक्षा दी। आंचलिक संयोजक सीमा दस्सानी, क्षेत्रीय संयोजक संगीता गोलछा व परीक्षा व्यवस्थापक पुष्पा बरडिया ने बताया कि इस परीक्षा में संपूर्ण २३ ज्ञानशालाओं में से हैदराबाद स्तर पर सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने वाले ज्ञानार्थियों में भाग-१ में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले ज्ञानार्थी विहान बोथरा, निशिका जैन, अन्वी दुगड़ और मनन भंडारी रहे। द्वितीयस्थान

पर नवगठित काचीगुड़ा ज्ञानशाला काशवी दुगड़, प्रांजल भंडारी, रोहन के ज्ञानार्थी अंशिका हीरावत और खटेड़ ने प्राप्त किया। तृतीय स्थान पर करुण पोरवार रहे।

रिद्धि आंचलिया रहे। तृतीय स्थान अदिति संचेती, सतीश संचेती तथा रेयांश बोथरा ने प्राप्त किया।

भाग-२ में प्रथम स्थान निमेष बरडिया, कृति दुगड़, मिहान चोपड़ा, मिशा सिंधी, पलक मंडोत, रीत पिंचा, तृषा सिंधी ने प्राप्त किया। द्वितीय स्थान पर काव्य श्रीमाल, विहान सुराणा रहे। तृतीय स्थान मुस्कान सिंधी ने प्राप्त किया।

भाग-३ में प्रथम स्थान हर्षित बोथरा ने प्राप्त किया। द्वितीय स्थान



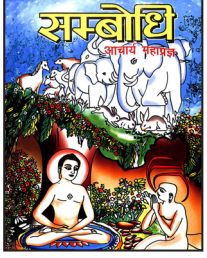
अखिल भारतीय
तेरापंथ
टाइम्स

६ केन्द्रों में २३
ज्ञानशालाओं
के लगभग २५०
बच्चों ने मौखिक
परीक्षा दी।

भाग-४ में प्रथम स्थान रीत चैरडिया, निहिरा बरडिया, धृति दुगड़, अहंम् भंसाली, वीर लाहोटी ने प्राप्त किया। द्वितीय स्थान पर विहा भंसाली रही। तृतीय स्थान पूर्वी सिंधी तथा उत्सव भंसाली ने प्राप्त किया।

भाग-५ में प्रथम स्थान प्रियांशी श्रीमाल ने प्राप्त किया। द्वितीय स्थान अनाया बोथरा तथा जाहवी बैद ने प्राप्त किया। तृतीय स्थान ध्वनि नाहटा तथा रिया लूणावत ने प्राप्त किया।

संबोधि

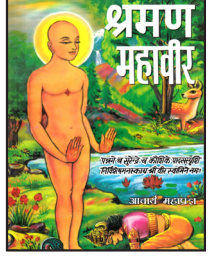


ज्ञेय-हेय- उपादेय



-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

श्रमण महावीर



स्वतन्त्रता का अभियान

(पिछला शेष)

१०- संहरेत् हस्तपादौ च, मनः पंचेन्द्रियाणि च ।

पापकं परिणामञ्च, भाषादोषञ्च तादृशम् ॥

मेधावी पुरुष हाथ, पांव, मन, पांच इन्द्रियों, असद् विचार और वाणी के दोष का उपसंहार करे।

११- कृतञ्च क्रियमाणञ्च भविष्यन्नाम पापकम् ।

सर्वं तन्नानुजानन्ति, आत्मगुप्ताः जितेन्द्रियाः ॥

जो पुरुष आत्मगुप्त और जितेन्द्रिय हैं, वे अतीत, वर्तमान और भविष्य के पापों का अनुमोदन नहीं करते।

पाप अशुभ प्रवृत्ति है। अशुभ प्रवृत्ति में व्यक्ति पहले अपने को सताता है और जो स्वयं को दुःख देता है वही दूसरे को सताता है, इस दृष्टि से यह भी कहा जा सकता है कि पाप है अपने को दुःख देना। जो आत्मस्थ हैं, स्वयं में स्थित हैं और जिनकी इन्द्रियां शांत हो गई हैं वे स्वयं में प्रसन्न हैं, आनंदित हैं। सुखी व्यक्ति न स्वयं को सताता है और न दूसरों को कष्ट देता है। इसलिए पाप का अनुमोदन उसके द्वारा संभाव्य नहीं होता। अध्यात्म की साधना है - स्वयं में प्रतिष्ठित होना। पाप से बचने की अपेक्षा स्वयं में स्थित होने का प्रयत्न अधिक सशक्त है। अपने से बाहर जाना ही पाप है।

मेघः प्राह

१२- प्रभो ! प्रसादमासाद्य, चेतः पुलकितं मम ।

वाणी सुधारसासिक्ता, संतापं हरते नृणाम् ॥

मेघ बोला- प्रभो ! आपका प्रसाद प्राप्त कर मेरा मन पुलकित हो उठा।

आपकी सुधारस से सिक्त वाणी मनुष्यों के संताप का हरण कर लेती है।

मन्दिर में प्राप्त होने वाला प्रसाद स्थूल है और गुरु सान्निध्य में प्राप्त होने वाला भिन्न है। एक सीधा और शीघ्र प्रभावकारी होता है। 'गुरु' शब्द में ही कुछ विशिष्टता है, उस विशिष्टता से युक्त व्यक्ति ही गुरु होता है। जो 'गु' अंधकार से 'रु' प्रकाश की ओर ले जाए वह गुरु होता है। 'गु' अर्थात् ग्रंथातीत और 'रु' यानी रूपातीत-जो शिष्य का तीन गुणों व नाम रूप के मिथ्या जगत् से सम्यग् बोध देकर मुक्ति की दिशा में अग्रसर करता है, वह गुरु होता है। ऐसे ही गुरु की उपासना संताप का उन्मूलन करती है, दिव्यदृष्टि प्रदान करती है और अज्ञान-तम को विध्वंस करती है। जिस स्वरूप- बोध के अभाव में अनंत दुःखों को भोगा, दुःखों में ही अनंत जीवन गुजरे, गुरु उस स्वरूप-बोध को देकर दुःखों की जड़ें हिला देते हैं और सुख का स्रोत भीतर प्रकट कर देते हैं। शिष्य जब इस स्थिति को प्राप्त करता है, तब उसके आनंद की सीमा नहीं रहती। स्वतः ही उसके मुख से अनिर्वचनीय शब्द फूट पड़ते हैं। मेघ का स्वर इसी सत्य का द्योतक है।

इति आचार्यमहाप्रज्ञविरचिते संबोधिप्रकरणे

हेय - ज्ञेय - उपादेयनामा द्वादशोऽध्यायः ।

(क्रमशः)

श्रमण महावीर

जीवनवृत्त : कुछ चित्र, कुछ रेखाएँ

(पिछला शेष)

'व्यवहार क्या है, चुल्लपिता !'

'कुमार ! तुम दर्शन की बातें कर रहे हो। मैं तुमसे अपेक्षा करता हूँ कि तुम व्यवहार की बात करो।'

'कुमार ! वज्जिसंघ का व्यवहार है-गणराज्य की परिषद् में भाग लेना और गणराज्य के शासन-सूत्र का संचालन करना।'

'चुल्लपिता ! मैं जानता हूँ, यह हमारा परम्परागत कार्य है। पर मैं क्या करूँ, हिंसा और विषमता के वातावरण में काम करने के लिए मेरे मन में उत्साह नहीं है।' कुमार के मृदु और विनम्र उत्तर से सुपाशर्व कुछ आश्चर्यचकित हुए। उन्होंने वार्ता को आगे बढ़ाना उचित नहीं समझा। वे कुमार को गहराई से सोचकर फिर बात करने की सूचना दे अपने कक्ष में चले गए।



मेरा मित्र साइंस कालेज में प्राध्यापक है। एक दिन उसने पूछा, 'महावीर ने मुनिधर्म की दीक्षा क्यों ली?' इस प्रश्न का परम्परा से प्राप्त उत्तर मेरे पास था। वह मैंने बता दिया। उससे उसे संतोष नहीं हुआ। वह बोला, 'महावीर स्वयं-बुद्ध थे इसलिए स्वयं दीक्षित हो गए, यह उत्तर बुद्धि को मान्य नहीं है। कोई कार्य है तो उसका कारण होना ही चाहिए।'

उसके तर्क ने मुझे प्रभावित किया। मैं थोड़े गहरे में उतरा। तत्काल भगवान् अरिष्टनेमि की घटना बिजली की भांति मेरे मस्तिष्क में कौंध गयी। अरिष्टनेमि की बारात द्वारका से चली और मथुरा के परिसर में पहुंची। वहां उन्होंने एक करुण चीत्कार सुनी। उन्होंने अपने सारथी से पूछा, 'ये इतने पशु किसलिए बाड़ों और पिंजड़ों में एकत्र किए गए हैं?'

'बारात को भात देने के लिए।'

अरिष्टनेमि का दिल करुणा से भर गया। उन्होंने कहा, 'एक का घर बने और इतने निरीह जीवों के घर उजड़े, यह नहीं हो सकता। वे तत्काल वापस मुड़ गए। अहिंसा के राजपथ पर एक क्रान्तदर्शी व्यक्तित्व अवतीर्ण हो गया।

मैं प्रागैतिहासिक काल के धुंधले-से इतिहास के आलोक में आ गया। वहां मैंने देखा-राजकुमार पार्श्व एक तपस्वी के सामने खड़े हैं। तपस्वी पंचाग्नि तप की साधना कर रहा है। राजकुमार ने अपने कर्मकरों से एक जलते हुए काष्ठ को चीरने के लिए कहा। एक कर्मकर ने उस काष्ठ को चीरा। उसमें एक अर्थदग्ध सांप का जोड़ा निकला।

इस घटना ने राजकुमार पार्श्व के अन्तःकरण को झकझोर दिया। उनका अहिंसक अभियान प्रारम्भ हो गया।

क्या महावीर का अन्तःस्तल किसी घटना से आन्दोलित नहीं हुआ है? इस प्रश्न से मेरा मन बहुत दिनों तक आलोलित होता रहा। आखिर मुझे इस प्रश्न का उत्तर मिल गया।

भगवान् महावीर महाराज सिद्धार्थ के पुत्र थे। सिद्धार्थ वज्जिसंघ-गणतंत्र के एक शासक थे। एक शासक के पुत्र होने के कारण वे वैभवपूर्ण वातावरण में पले-पुसे थे। उन्हें गरीबी, विषमता और भेदभाव का अनुभव नहीं था और न उन्हें इसका अनुभव था कि साधारण आदमी किस प्रकार कठिनाइयों और विवशताओं का जीवन जीता है।

एक दिन राजकुमार महावीर अपने कुछ सेवकों के साथ उद्यान-क्रीड़ा को जा रहे थे। राजपथ के पास एक बड़ा प्रासाद था। जैसे ही राजकुमार उसके पास गए, वैसे ही उन्हें एक करुण क्रन्दन सुनाई दिया। लगाम का इशारा पाते ही उनका घोड़ा ठहर गया। राजकुमार ने अपने सेवक से कहा, 'जाओ देखो, कौन, किस लिए बिलख रहा है?'

सेवक प्रासाद के अन्दर गया। वह स्थिति का ज्ञान प्राप्त कर वापस आ गया। राजकुमार ने पूछा, 'कहो, क्या बात है?'

'कुछ नहीं, महाराज ! यह घरेलू मामला है।'

'तो फिर इतनी करुण चीख क्यों?'

'गृहपति अपने दास को पीट रहा है।'

'क्या दास उनके घर का आदमी नहीं है?'

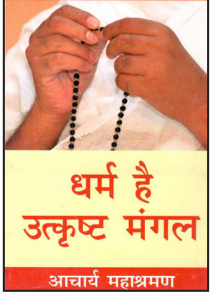
'घर का जरूर है पर घर में जन्मा हुआ नहीं है, खरीदा हुआ आदमी है।'

'शासन ने न केवल खरीदने का ही अधिकार दे रखा है, किन्तु क्रीत व्यक्ति को मारने तक का अधिकार भी दे रखा है।'

(क्रमशः)



धर्म है उत्कृष्ट मंगल



धर्म है
उत्कृष्ट मंगल

आचार्य महाश्रमण

-आचार्यश्री महाश्रमण

निर्जरा : एक विश्लेषण



(पिछला शेष)

अशुभ योग निरुद्ध हो जाने से निवृत्ति हो जाएगी। प्रवृत्ति बन्द हो जाएगी, ऐसा नहीं माना जा सकता। योगों की अशुभता दूर होती है, एक सीमा तक रागात्मक व द्वेषात्मक परिणाम रुकते हैं। उससे अत्रत आश्रव रुकता है। अशुभ योग को रोकने से योग निरोध नहीं होता, रागद्वेषात्मक परिणामों का सीमित निरोध होता है। अशुभ योग शुभ योग में परिवर्तित हो जाता है। योग निरोध कहाँ हुआ? योग निरोध या अयोग तब होता है जब अशुभयोग निवृत्ति के बाद शुभयोग की भी निवृत्ति हो। यह स्थिति पूर्णरूपेण चौदहवें गुणस्थान में निष्पन्न होती है। साधु उपवास, बेला आदि तपस्या करता है तो उसके निरवद्य योग के निरोध से सहचारी संवर भी होता है। इसे आंशिक अयोग संवर कहने में आपत्ति नहीं होनी चाहिए।

श्रावक कर्मक्षय के लिए उपवास आदि तपस्या करता है तो सावद्य योग का निरोध होने से उसके सहचारी व्रत संवर होता है।

श्रावक के सारे पौद्गलिक भोग मन-वचन-काय के सावद्य व्यापार हैं। उनका प्रत्याख्यान करने से व्रत संवर अंशतः निष्पन्न होता है और सहचारी तप भी होता है।

साधु का चलना, फिरना आदि व्यापार, यदि वह उपयोग सहित किया जाए तो, निरवद्य योग है। उनका निरोध करने के अनुपात से संवर होता है और साथ-साथ तपस्या भी होती है।

संवर का विषय बहुत गम्भीर और अति उपयोगी है। गहन चिन्तन-मनन और अनुप्रेक्षा से नई दृष्टि अनावृत हो सकती है।

(६) निर्जरा : एक विश्लेषण

जैन दर्शन में षड्द्रव्य और नवतत्त्व- पदार्थ के दो वर्गीकरण उपलब्ध हैं। षड्द्रव्य का सिद्धांत विश्व व्यवस्था को व्याख्यायित करता है और नवतत्त्व अध्यात्म के साधक-बाधक तत्त्वों का निरूपण करता है। षड्द्रव्य के केन्द्र में है विशव व्यवस्था और नवतत्त्व के केन्द्र में है अध्यात्म।

नवतत्त्व में सातवां तत्त्व है- निर्जरा। इसका स्वरूप है तपस्या से होने वाला आत्मा का शोधन। निर्जरा और मोक्ष दोनों में कर्मक्षय होता है। आंशिक कर्मक्षय निर्जरा और सम्पूर्ण कर्मक्षय मोक्ष कहलाता है।

निर्जरा के दो प्रकार हैं- सकाम और अकाम। आत्मशुद्धि की भावना से की जाने वाली निर्जरा सकाम और उसके बिना होने वाली निर्जरा अकाम कहलाती है। दोनों ही प्रकार की निर्जरा सम्यग् दृष्टि और मिथ्यादृष्टि दोनों प्रकार के जीवों के हो सकती है।

आचार्य उमास्वाति ने निर्जरा के दो भेद किये हैं-अबुद्धिपूर्वा निर्जरा और कुशलमूला निर्जरा। कर्मों के फल-विपाक से सहजतया जो कर्मों की निर्जरा होती है वह अबुद्धिपूर्वा निर्जरा है। इसमें कर्म-निर्जरण का इरादतन प्रयास नहीं होता। इस प्रकार की निर्जरा को अकुशलानुबन्धा भी कहा जाता है। आत्मशुद्धि के उद्देश्य से की जाने वाली तपस्या और परीषहजय से होने वाली निर्जरा कुशलमूला कहलाती है।

कुशलमूला निर्जरा भी दो प्रकार की होती है- शुभानुबन्धा और निरनुबन्धा। जिस निर्जरा का फल स्वर्ग आदि सुगति हो, वह शुभानु- बन्धा निर्जरा है। जो साक्षात् मोक्ष का कारण बने वह निरनुबन्धा निर्जरा है। अकामनिर्जरा की अबुद्धिपूर्वा और सकामनिर्जरा की कुशलमूला के साथ तुलना की जा सकती है।

निर्जरा वास्तव में एकाकार है, एक ही प्रकार की है। विभिन्न दृष्टिकोणों से उसके अनेक वर्गीकरण भी किए जा सकते हैं। निर्जरा ज्ञानावरण आदि आठ कर्मों की होती है इसलिए वह आठ प्रकार की होती है। अनशन, ऊनोदरी, भिक्षाचरी, रसपरित्याग, कायक्लेश, प्रतिसंलीनता, प्रायश्चित्त, विनय, वैयावृत्य, स्वाध्याय, ध्यान और व्युत्सर्ग ये बारह प्रकार भी निर्जरा के कहे गए हैं।

गाढ़ बन्धन से बद्ध कर्मों की निर्जरा अल्प तथा शिथिलबन्धन से बद्ध कर्मों की निर्जरा अधिक होती है।

वेदना को सहने से भी निर्जरा होती है। किन्तु निर्जरा के तारतम्य में वेदना की अधिकता या अल्पता मुख्य कारण नहीं है। उसका मुख्य कारण है कष्ट को सहने की पद्धति। प्रतिमाधारी मुनि महान् वेदना को समभाव से सहन करता है इसलिए उसमें महानिर्जरा होती है। सप्तम नरक के नैरयिक के भी महावेदना होती है पर उसको समभाव से न सहने के कारण निर्जरा अल्प होती है।

निर्जरा का मूल हेतु है प्रशस्त अध्यवसाय एवं शुभ योग। निर्जरा की अल्पता या बहुलता उसी पर निर्भर है। तत्त्वार्थ सूत्र में अध्यवसाय के प्रकर्ष के आधार पर निर्जरा के तारतम्य का प्रतिपादन किया गया है:-

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री भारीमालजी युग

मुनि पीथमल जी (बाजोली) दीक्षा क्रमांक: ५६

मुनि विनयी, सेवार्थी और तपस्वी थे। दीक्षित होते ही उत्कट तप करना प्रारंभ कर दिया। प्रारंभ के ६ चतुर्मासों में विविध तपस्या की, पर उन वर्षों में की गई तपस्या का विवरण नहीं मिलता। तपस्या के साथ वे आतापना भी लेते थे। उसके बाद उन्होंने बड़ी तपस्या (प्रायः आछ के आगार से) की।

- साभार: शासन समुद्र -

मार्च 2024		
सप्ताह के विशेष दिन		
12 मार्च	13 मार्च	17 मार्च
आचार्यश्री कालूगणी जन्मदिवस	भगवान मल्लिनाथ च्यवन कल्याणक	भगवान संभवनाथ च्यवन कल्याणक

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स समाचार प्रेषकों से निवेदन

- संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र 'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स' में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
- समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
- कृपया किसी भी न्यूज पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
- समाचार केवल पीडीएफ फॉर्मेट में इस मेल एड्रेस abtyptt@gmail.com पर ही भेजें।

निवेदक

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

❖ जो समय बीत गया, वह वापस नहीं आता। इसलिए उसे पीछे से नहीं, आगे से पकड़ने का प्रयत्न करना चाहिए तथा उसका सदुपयोग करने का प्रयास करना चाहिए।

-आचार्य श्री महाश्रमण



ऑनलाइन पढ़ने के लिए
terapanthtimes.com



तेरापंथ महिला मंडल के विविध आयोजन रिश्तों में हो सामंजस्य की भावना



मदुरै

तेरापंथ महिला मंडल द्वारा स्थानीय तेरापंथ भवन मदुरै में 'नाजुक रिश्ता ननद-भाभी का' कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत सीमंधर स्तुति और प्रेरणा गीत से हुई। अध्यक्ष लता कोठारी ने सबका स्वागत किया। कार्यशाला की मुख्य वक्ता दीपिका फुलफगर ने कहा कि समय के साथ रिश्ते भी बदलते रहते हैं। आजकल ननद और भाभी का रिश्ता दोस्ती का रिश्ता बन गया है। दोनों एक दूसरे की चुगली ना करें, एक दूसरे के साथ स्पष्टता से रहें, रिश्ते की महानता समझते हुए इसे सुंदर तरीके से निभाएं। रिश्ते बहुत ही अनमोल होते हैं, भाभी और ननद का रिश्ता प्यार से भरा होना चाहिए, तभी घर का माहौल खुशनुमा रहता है, लंबे समय तक सभी रिश्तों में मिठास रहती है। महिला मंडल की बहनों ने ननद-भाभी के खट्टे मिठे अनुभवों को साझा किया। धन्यवाद ज्ञापन प्रेमलता बुरड ने किया।

नवरंगपुर, अहमदाबाद

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार नवरंगपुर तेरापंथ महिला मंडल द्वारा दीनदयाल कन्या अनाथ आश्रम में 'अनमोल रिश्ता सास बहू का' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से तथा प्रेरणा गीत से किया गया। तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष बाँबी जैन ने सभी का स्वागत करते हुए सास बहू के अनमोल रिश्ते पर विचार रखे और बताया कि यह नाजुक रिश्ता कैसे मधुर बनाया जा सकता है। आश्रम की बालिकाओं ने बड़े उत्साह से कार्यक्रम में सहभागिता

की। उन्हें यह समझाया गया कि आगे जाकर ससुराल में कैसे सास के साथ मां का रिश्ता बनाना है और ससुराल में बहू बनकर नहीं बेटी बन कर रहना है।

नाभा

साध्वी कनकरेखाजी के सान्निध्य में अखिल भारतीय महिला मंडल के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल, नाभा द्वारा 'ननद भाभी का रिश्ता' का कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ सुमन-सीमा जैन ने मंगलाचरण से किया। महिला मंडल अध्यक्ष राजराणी जैन ने स्वागत भाषण के साथ अपने विचार रखे। साध्वी कनकरेखाजी ने अपने वक्तव्य में कहा- परिवार की खुशहाली का राज है- रिश्तों में मिठास। रिश्ते अनेक प्रकार के होते हैं- चाहे सास-बहू का रिश्ता हो, पति-पत्नी का रिश्ता हो या ननद-भाभी का रिश्ता हो। हमारे रिश्तों के बीच सामंजस्य की भावना हो तो निश्चित रूप से मिठास परिवार के हर रिश्तों के साथ घुल जाती है। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता अरूणा सिंगला व साध्वी संवरविभा जी ने अपने विचार रखे। मंत्री नीलम जैन ने सभी का आभार ज्ञापन किया।

काँटाबांजी, उड़ीसा

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में 'नाजुक सा रिश्ता ननद भाभी का' कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से की गयी। तत्पश्चात महिला मंडल की सदस्यों ने प्रेरणा गीत का संगान किया। इस कार्यक्रम में ६ ननद भाभी की जोड़ियों ने हिस्सा लिया। सभी ने ननद-भाभी के खट्टे-मिठे रिश्ते को बहुत सुंदर तरीके से प्रस्तुत किया। महिला मंडल की

अध्यक्षा आशा जैन एवं अन्य सदस्यों ने भी इस विषय पर अपने-अपने विचार रखे। कार्यक्रम के बाद सभी प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम में लगभग ३० सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन बबली जैन व आभार ज्ञापन चंचल जैन ने किया।

हैदराबाद

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित स्वस्थ परिवार स्वस्थ समाज के अंतर्गत 'नाजुक सा रिश्ता ननद-भाभी का' कार्यशाला तेरापंथ महिला मंडल हैदराबाद के तत्वावधान में मृगावती जॉन शिवरामपल्ली स्थित सुषमा कुंडलिया के आवास पर कार्यशाला रखी गई। कार्यक्रम का शुभारंभ सम्पन्न नाहटा ने नमस्कार महामंत्र द्वारा किया। कार्यक्रम के प्रारंभ में उपस्थित संभागियों को पांच मिनट मैत्री की अनुप्रेक्षा का प्रयोग करवाया गया। राजश्री श्यामसुखा द्वारा मंगलाचरण किया गया।

अध्यक्ष कविता आच्छा द्वारा स्वागत भाषण के साथ मंडल की गतिविधियों की जानकारी दी गई। जोन की बहनों द्वारा अध्यक्ष, मंत्री एवं मुख्य वक्ता का स्वागत किया गया। कार्यक्रम में ननद भाभी की सात जोड़ियों ने भाग लिया। सभी की प्रस्तुतियाँ बहुत ही रोचक, मजेदार, ननद-भाभी की खट्टी-मिठ्टी नोक-झोंक व मिठास से भरपूर थी। मुख्य वक्ता मनीषा सुराणा ने कहा- ये रिश्ते बड़े अनमोल होते हैं इनको बेकार न जाने दें।

हंसी-मजाक से भरा ननद-भाभी का रिश्ता बहुत कुछ बताता है। यह हर अच्छे बुरे दौर में एक दूजे के साथ खड़े रहना सिखाता है। ननद-भाभी के रिश्ते को मजबूत करने के लिए दोनों

को साथ समय बिताना, दोस्ती का भाव रखना, वाणी का संयम करना, चुगली से बचना आदि अनेक बिंदुओं के बारे में समझाया गया। मृगावती जॉन की बहनों ने सुंदर गीतिका प्रस्तुति की। मंत्री सुशीला मोदी व प्रभा दुगड़ ने इस विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। सरिता डागा ने मुख्य वक्ता का परिचय दिया। कार्यक्रम का संचालन शिल्पा सुराणा ने किया। आज की कार्यशाला की संयोजिका शिल्पा सुराणा, सुषमा कुंडलिया एवं मंजू भंसाली रहीं। प्रस्तुति एवं प्रतियोगिता के आधार पर प्रथम स्थान पर रंजू जैन एवं द्वितीय स्थान पर संगीता बारमेचा रही। सभी प्रतिभागियों को सांत्वना पुरस्कार दिए गए। मृगावती जॉन व दीपानंदन जॉन ने बहुत ही सुंदर ढंग से रिश्ते अनमोल धरोहर कार्यशाला को सुव्यवस्थित रूप दिया। कार्यक्रम में लगभग ७० बहनों ने इस कार्यशाला में अपनी सहभागिता दर्ज करवाई। आभार ज्ञापन कुसुम सिपानी ने किया।

बालोतरा

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल बालोतरा द्वारा शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी के सान्निध्य में स्वस्थ परिवार-स्वस्थ समाज के अंतर्गत नाजुक सा रिश्ता ननद-भाभी का कार्यक्रम आयोजित किया गया। नमस्कार महामंत्र के मंगलाचरण से इस कार्यक्रम की शुरुआत की गई। मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत का संगान किया। साध्वी ध्यानप्रभा जी द्वारा मैत्री की अनुप्रेक्षा का प्रयोग करवाया गया। महिला मंडल अध्यक्ष निर्मला देवी संकलेचा ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी ने ननद-

भाभी के रिश्ते पर कहा कि हर महिला ऐसे रिश्ते को प्रेम व सौहार्द से जिए। हर रिश्ते में आपसी समझ व सामंजस्य होना चाहिए। ननद-भाभी का रिश्ता दोस्त की तरह होना चाहिए तभी वह रिश्ता मजबूत रह सकता है। साध्वी श्रुतप्रभा जी ने भी ननद-भाभी के रिश्ते पर अपने विचार व्यक्त किए। ननद-भाभी की श्रेष्ठ जोड़ी भावना छाजेड़-श्रद्धा सिंघवी को महिला मंडल की ओर से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में भाग लेने वाली सभी ननद-भाभी की जोड़ियों को तेरापंथ महिला मंडल की तरफ से सांत्वना पुरस्कार से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री रेखा बालड़ व आभार ज्ञापन सह मंत्री रेखा भण्डारी ने किया।

कोयंबटूर

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल ने 'नाजुक सा रिश्ता ननद-भाभी का' कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के द्वारा हुई। स्थानीय अध्यक्ष मंजू सेठिया ने आगंतुकों का स्वागत किया। बहन पूजा दूगड़ ने प्रेरणा गीत का संगान किया। कार्यक्रम में मैत्री की अनुप्रेक्षा रूपकला भंडारी ने करवाई।

बहन बबिता गुनेचा ने बहुत ही सुंदर शैली में इस कार्यक्रम की रूपरेखा बताई। श्रेष्ठ संस्मरण सुनाने वाली जोड़ी को पुरस्कृत किया गया। तत्पश्चात उपस्थित सभी मंडल की बहनों के साथ बहिन सीमा बोकाड़िया ने ११ आचार्यों की जीवनी पर आधारित धार्मिक प्रतियोगिता रखी। इस प्रतियोगिता में दो विजेता बहनों को भी पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का संचालन अपराजिता नाहटा व धन्यवाद ज्ञापन उपाध्यक्ष मोनिका लुनिया ने किया।

अणुव्रत डिजिटल डिटॉक्स, एलिवेट द रियल हाईट्स विषय पर सेमिनार

मुलुंड, मुम्बई।

प्रिन्स ऑफ मुंबई से अलंकृत सांस्कृतिक और धर्म नगरी मुलुंड में अणुव्रत यात्रा प्रवर्तक आचार्यश्री महाश्रमण जी के सान्निध्य में विद्यार्थियों के लिए 'डिजिटल डिटॉक्स, एलिवेट द रियल हाईट्स और नो टू ड्रग्स' विषय पर विशाल सेमिनार आयोजित

हुआ महाकवि कालिदास नाट्य मंदिर हॉल में आयोजित सेमिनार में ग्यारह विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के लगभग एक हजार छात्र छात्राओं ने भाग लिया।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य प्रवर ने उद्बोधन प्रदान करते हुए कहा- 'डिजिटल डिटॉक्स एवं नशामुक्ति से जीवन शांति से जिया जा सकता है।'

चार अलग-अलग विषयों पर मोटिवेटर चिराग पामेचा के संयोजन में स्वेता लोढा, विवेक संघवी, डॉ. सोनल जैन, रेणुका कोठारी ने विद्यार्थियों को रूचिपूर्ण ढंग से खेल-खेल में जानकारी उपलब्ध कराई।

विशेष अतिथि जोन सात के पुलिस कमिश्नर पुरूषोत्तम कराड ने विद्यार्थियों से फेस टू फेस बात कर

ड्रग्स एवं ए आई खतरों से बचने के उपाय के साथ डिजिटल डिटॉक्स हेतु प्रेरित किया।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्या मुनि मननकुमार जी, मुनि अभिजीतकुमार जी, मुनि गौरवकुमार जी एवं मुनि जागृतकुमार जी ने आधुनिक खतरों से बचने की प्रेरणा और अध्यात्म योग से जीवन

को भावित करते हुए अणुव्रत के नियमों को जीवन में लागू करने का संकल्प करवाया। कार्यक्रम को सफल बनाने में गजेन्द्र पीपाड़ा, विजय पटवारी, रवि पटवारी, राकेश सिंघवी, कपिल बागरेचा, भरत कोठारी आदि ने श्रम किया।



‘टीपीएफ संकल्प साइक्लोथोन’ का हुआ भव्य आयोजन

कोलकाता।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के तत्वावधान में टीपीएफ-कोलकाता एवं हावड़ा रीजन शाखा द्वारा टीपीएफ के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज ओस्तवाल की अध्यक्षता में ‘टीपीएफ संकल्प साइक्लोथोन’ का इको पार्क, कोलकाता में भव्य आयोजन हुआ।

नमस्कार महामंत्र व टीपीएफ गीत द्वारा इस इवेंट की शुरुआत का शंखनाद किया गया। उसके तत्पश्चात

राष्ट्रीय स्पॉन्सर, अतिथिगण, राष्ट्रीय अध्यक्ष, साइक्लोथोन कन्वीनर आदि को सम्मानित भी किया गया। हिडको के अध्यक्ष देबाशीष सेन, पेरा एथेलेट प्रोबिन सरकार की गरिमामय उपस्थिति रही।

राष्ट्रीय अध्यक्ष ने साइक्लोथोन इवेंट के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी और कहा कि हमारी टीपीएफ की शाखाएं पूरे भारत में समाज को अपनी सेवाएं प्रदान कर रही हैं। टीपीएफ नेक्स्ट जोन के राष्ट्रीय

कन्वीनर श्रेयांश जैन ने अपने विचार व्यक्त किए।

साइकिलिंग के साथ सभी ने योगा आदि का भरपूर आनंद लिया। बच्चों के लिए अलग से किड्स कॉर्नर की व्यवस्था की गई। राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज ओस्तवाल ने झंडा लहराकर गुब्बारे को हवा में उड़ाकर, साइकिलिस्ट को साइकिल चलाने का ग्रीन सिग्नल दिया। दो राउंड में लगभग 9 किलोमीटर साइकिल चलाई गई।

फिजिकल मिशन एंपावरमेंट से लाभान्वित हुए स्कूली बच्चे

सूरत।

टीपीएफ की कार्यशाला फिजिकल मिशन एंपावरमेंट अभातेयुप सत्र-२०२३-२५ का शुभारंभ सूरत परिषद में किया गया। जिसके अंतर्गत ६ स्कूलों में तीन दिन में कार्यशाला के अंतर्गत ६८० बच्चों को प्रशिक्षण दिया।

पैराडाइज इंग्लिश एकेडमी, पर्वत पाटिया से करीब १०० बच्चों ने टीडी वाशी सरस्वती विद्यालय, उधना से करीब १२५ बच्चों ने, एनडी कोठारी स्कूल, अंतरोली से करीब 165 बच्चों

ने, एस०के० जैन स्कूल अंतरोली से ८० बच्चों ने, वीके० जैन स्कूल, उधना से करीब १२० बच्चों ने, लोक भारती स्कूल गुजराती मीडियम, सिटीलाइट, सूरत से करीब ९० बच्चों ने कार्यशाला में भाग लिया। इस कार्यशाला को टीपीएफ नेशनल ट्रेनर चिराग पामेचा एवं सहयोगी ट्रेनर जिनियस मेहता द्वारा संचालित किया गया, जिसमें बच्चों को आपदा प्रबंधन के गुर सिखाए गए।

इस कार्यशाला को लेकर स्कूल की तरफ से भी सकारात्मक सहयोग मिला और बताया गया कि बच्चों के लिए यह

बहुत ही आवश्यक है, भविष्य में इसे बड़े स्तर पर करने का आश्वासन भी दिया। सभी स्कूल की तरफ से तेयुप और टीपीएफ की टीम के प्रति आभार प्रकट किया। इस कार्यक्रम में सहयोगी के रूप में तेयुप, पर्वत पाटिया, उधना, चेतना सिंघवी, पैराडाइज इंग्लिश एकेडमी प्रिंसिपल और महावीर इंटरनेशनल का सहयोग मिला।

कार्यशाला के अंत में अध्यक्ष सचिन चंडालिया द्वारा स्कूल ट्रस्टी, प्रिंसिपल और फैकल्टी का आभार ज्ञापन किया गया।

शिशु संस्कार बोध परीक्षा 2023 प्रमाण पत्र वितरण

साउथ कोलकाता।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेशकुमार जी के सान्निध्य में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा साउथ कोलकाता में पांच ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों को पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर मुनिश्री ने कहा कि ज्ञानशाला संस्कारों की निर्माण शाला है। आज के बच्चे देश के भावी कर्णधार हैं। जब बच्चे संस्कारित होंगे तभी व्यक्ति विकास कर सकेगा, परिवार समाज और राष्ट्र स्वस्थ, खुशहाल और समृद्ध होगा। पुरस्कार वितरण समारोह

में बच्चों को उपस्थिति के लिए पुरस्कार दिया गया। जिन बच्चों ने महापर्व पर उपवास किए उन्हें भी पुरस्कृत किया गया। शिशु संस्कार बोध पुस्तक भाग १ से ५ तक की परीक्षा देने वाले ७७ बच्चों को प्रमाण पत्र देकर प्रोत्साहित किया गया।

सभा की ट्रस्टी डॉ प्रतिभा कोठारी, कोषाध्यक्ष रतनलाल सेठिया एवं टीपीएफ के अध्यक्ष प्रवीण सिरोहिया ने बच्चों को पुरस्कृत किया। इस अवसर पर वृहद् कोलकाता के श्रावक समाज की बड़ी संख्या में उपस्थित रही।

अस्थि चिकित्सा शिविर का आयोजन

पूर्वांचल कोलकाता। डॉ. धीरज मरोठी के निर्देशन में अस्थि चिकित्सा शिविर का आयोजन एटीडीसी पूर्वांचल कोलकाता में किया गया। कुल १३ व्यक्तियों ने इस शिविर में चिकित्सा का लाभ लिया। तेयुप पूर्वांचल कोलकाता ने डॉ. धीरज मरोठी को उनके द्वारा प्रदत्त निरंतर सहयोग के लिए विशेष साधुवाद प्रकट किया।

वर्ष २०२३-२४ का यह छठा अस्थि चिकित्सा शिविर था। तेयुप पूर्वांचल कोलकाता से उपाध्यक्ष द्वितीय नीरज बैंगानी एवं संयोजक रोहित धाड़ेवा का इस शिविर में विशेष सहयोग रहा।

रक्तदान शिविर के विविध आयोजन

गुवाहाटी

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद गुवाहाटी द्वारा रक्तदान शिविर का सफल आयोजन किया गया। शिविर का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से किया गया। तेयुप अध्यक्ष जयंत सुराणा ने रक्तदान का महत्व बताते हुए शिविर में उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत-अभिनंदन किया। शिविर में १२ यूनिट रक्त संग्रह हुआ। शिविर में तेयुप पदाधिकारी एवं तेयुप सदस्य मोहित बोथरा की सक्रिय भूमिका रही।

वड़ोदरा

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद वड़ोदरा ने रक्तदान शिविर का आयोजन अलंकार मार्बल्स मकरपुरा में किया। रक्तदान शिविर में तेरापंथी सभा तथा तेरापंथ युवक परिषद के सदस्यों का सराहनीय सहयोग व सहभागिता रही। इस शिविर में कुल ४१ यूनिट ब्लड एकत्रित हुआ। शिविर के सफल आयोजन में पंकज बोलिया, अशोक बोलिया एवं भेरुलाल पीतलीया ने सहयोग दिया।

संक्षिप्त खबर

कैंसर जागरूकता अभियान

कोयंबटूर। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार कोयंबटूर तेरापंथ महिला मंडल ने कैंसर अवेयरनेस सेमिनार का आयोजन तेरापंथ भवन में किया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से किया गया। तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष मंजू सेठिया ने सभी का स्वागत व अभिनंदन किया। पहली मुख्य वक्ता डॉ. भारती ने कैंसर के बारे में बहुत ही सुंदर व सरल तरीके से समझाया। उन्होंने कैंसर क्या और क्यों होता है, इस विषय में जानकारी देते हुए बताया कि हमारे शरीर की नियमित जांच से अनेक गंभीर बीमारियों से निजात पाई जा सकती है।

दूसरी मुख्य वक्ता नेचुरोपैथी व डाइटीशियन डॉ. उर्वशी लूनिया ने बताया कि रोग हमारे शरीर में क्यों होते हैं। छोटे बड़े सभी रोगों का मुख्य कारण हमारा खान-पान, रहन-सहन और तनाव भरी जीवन शैली होती है। दोनों डॉक्टरों ने अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के इस अभियान की बहुत ही सराहना की। धन्यवाद ज्ञापन उपाध्यक्ष मोनिका लूनिया ने किया। सेमिनार का कुशल संचालन अपराजिता नाहटा ने किया। सेमिनार में बहिनों की अच्छी उपस्थिति रही।

निःशुल्क मेगा हेल्थ चेकअप

साउथ हावड़ा। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के त्रिआयाम सेवा, संस्कार, संगठन के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद, साउथ हावड़ा द्वारा लायंस क्लब ऑफ कोलकाता एक्सिलेंस एवं राघव रेजिडेंट्स वेलफेयर एसोसिएशन के सहयोग से निःशुल्क मेगा हेल्थ चेक अप कैंप का आयोजन राघव रेसीडेंसी में हुआ। परिषद के अध्यक्ष गगनदीप बैद ने उपस्थित सभी महानुभावों का स्वागत-अभिनंदन किया।

कैंप में फोर्टिस हेल्थकेयर टीम के सहयोग से डॉक्टरों की उपस्थिति में ब्लड शुगर, बीएमडी जैसे विभिन्न प्रकार के स्वास्थ्य परीक्षण किये गये, जिसमें १११ लोगों का चेक अप हुआ। बीमारियों के उपचार के लिए संबंधित विभिन्न तरह के चेक अप की सुविधा समाज के लोगों के लिए उपलब्ध करवाई गई।



मुंबई महिला मंडल का ४३वां वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न

वारी, नवी मुंबई।

सिडको कन्वेंशन हॉल में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ महिला मंडल, मुंबई का ४३वां वार्षिक अधिवेशन एवं मुंबई के ४६ नवगठित तेरापंथ महिला मंडलों के शपथ ग्रहण कार्यक्रम का समायोजन हुआ। अभातेमम की संरक्षिका प्रकाश देवी तातेड़ ने नमस्कार महामंत्र के साथ कार्यक्रम की शुरुआत की। तेरापंथ महिला मंडल की कर्मठ एवं संघ सेवा में समर्पित श्राविका सरला कोठारी के गत दिनों आकस्मिक निधन पर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर साध्वी प्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने मंगल पाथेय प्रदान करवाते हुए फरमाया कि परिसीमन के साथ नवगठित मंडलों को अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में एकरूपता के साथ कार्य करते हुए संगठन को सशक्तिकरण प्रदान करना है। विकास के कार्यों को आगे बढ़ाना है एवं बिना किसी अहं भाव के सभी को साथ लेकर आगे बढ़ना है। तेरापंथ महिला मंडल, मुंबई की कार्यसमिति बहिनों ने सुमधुर गीतिका के साथ मंगलाचरण किया। अभातेमम की राष्ट्रीय अध्यक्षा सरिता डागा एवं महामंत्री नीतू ओस्तवाल ने तेरापंथ महिला मंडल, मुंबई के सफलतम कार्यकाल की सराहना करते हुए बधाई के भाव व्यक्त किए। अध्यक्षीय एवं स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए मुंबई महिला मंडल अध्यक्षा विमला कोठारी ने स्वागत किया व गत आठ महीनों के कार्यकाल के स्वर्णिम पलों को साझा

करते हुए अपने अनुभव बताए। उन्होंने कहा कि जिस बगिया को सरसाने में बीस पूर्वाध्यक्षों के साथ मुंबई महिला मंडल की हर बहिन ने अपने श्रम सिंचन से मंडल को एक शिखर स्वरूप प्रदान किया, उसका उल्लेख शायद शब्दों में बयां नहीं हो सकता।

राष्ट्रीय पूर्वाध्यक्ष कुमुद कच्छारा ने कहा कि पूर्व अध्यक्षों ने मुंबई महिला मंडल को जो मजबूती प्रदान की है और जो श्रम की स्याही से स्वास्तिक उकेरे हैं, उनका उपकार कभी न भुलाएं। पद पर आने के बाद पद का अभिमान नहीं करें। समय-समय पर पूर्व पदाधिकारीगण से परामर्श लेते रहें और छोटे-छोटे टिप्स लेकर मंडल को आगे बढ़ाएं।

मुंबई महिला मंडल मंत्री संगीता चपलोट ने पूज्यवरों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की और कहा कि आठ महीने के कार्यकाल में मंडल की हर एक बहिन से अपनत्व मिला और नन्दनवन के चातुर्मास में प्रत्येक क्षेत्र की बहिनों का श्रम व सहयोग मिला। यह मेरे जीवन का स्वर्णिम सफर रहा। भाग्यवंती कच्छारा व रेखा कोठारी ने मंगलकामनाएं प्रस्तुत की। कार्यसमिति सदस्य स्वीटी लोढ़ा ने पैनल डिस्कशन के अंतर्गत १९८१ से २०२४ तक के सभी पूर्वाध्यक्षों के विकास की पगडंडी पर उनके कर्तव्य, उनके सफर के संस्मरणों व अनुभवों को उनकी ही जुबानी सदन में सभी ने सुना। प्रेमलता सिसोदिया ने अपने अनुभव साझा किए। अब नवगठित मंडलों के इन नए अध्यक्षों को पुराने अनुभवों के साथ नई शुरुआत करनी है। मंजू छाजेड़

व सुनिता परमार ने अनुभवों को साझा करते हुए सभी को स्नेह व सौहार्द से आगे बढ़ने का संदेश दिया। मुंबई महिला मंडल के विकास के आयामों की झलकियों को वीडियो क्लिप्स के माध्यम से दिखाया गया। कोषाध्यक्ष सुनीता सुतरिया ने आय व्यय का ब्यौरा प्रस्तुत किया। कन्या मंडल सह प्रभारी पूनम परमार ने प्रतिवेदन की प्रस्तुति दी और संयोजिका काजल मादरेचा ने वर्ष २०१५ से २०२४ तक के प्रतिवेदन की मुख्य झलकियां वीडियो के माध्यम से प्रस्तुत की। कन्या मंडल प्रभारी मधु बाफना ने धन्यवाद प्रेषित करते हुए आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। कन्या मंडल सहसंयोजिका नेहा सोलंकी व निकिता चैहान का विशेष श्रम रहा। अध्यक्षा विमला कोठारी ने अपनी टीम सहित कार्यकारिणी को निरस्त किया व अपने पद का विसर्जन किया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष सरिता डागा की अध्यक्षता में नवगठित ४६ महिला मंडल की नवनि्युक्त अध्यक्षाओं ने शपथ ग्रहण किया एवं महामंत्री नीतू ओस्तवाल ने मंडल के नीति निर्देशों से सभी को अवगत करवाया। शपथ विधि की प्रक्रिया में राष्ट्रीय कार्यकारिणी कोषाध्यक्ष तरुणा बोहरा, सदस्य निर्मला चण्डालिया, अलका मेहता का सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ। मंच का संचालन मुंबई महिला मंडल सहमंत्री सरिता ढालावत ने किया। आभार ज्ञापन ई-मीडिया प्रभारी अनिता सियांल ने किया। अधिवेशन में लगभग १२०० बहिनों की उपस्थिति रही।

संक्षिप्त खबर

विश्व एनजीओ दिवस पर मानव सेवा कार्य

राजाजीनगर। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के त्रि-आयामी सूत्रों सेवा-संस्कार-संगठन के क्षेत्र में कार्य करते हुए तेयुप राजाजीनगर ने मानव सेवा के अंतर्गत आज विश्व एनजीओ दिवस के उपलक्ष्य में गोलहल्ली, कुम्बलगूडू में सेवालया चिल्ड्रेन्स होम द्वारा संचालित 'स्वामी विवेकानंद सोशल सर्विस ट्रस्ट' में प्रतिदिन उपयोग में आने वाली सामग्री प्रदान कर सेवा कार्य संपादित किया। ट्रस्ट केयर-टेकर पुनीत ने ट्रस्ट की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करते हुए कहा कि यह ट्रस्ट पिछले ११ वर्षों से संचालित है जिसमें लगभग २० निराश्रित बच्चों की देख-भाल की जा रही है। ट्रस्ट ने परिषद परिवार की सरहाना करते हुए सभी का धन्यवाद व्यक्त किया।

वृद्ध लोगों हेतु सेवा कार्य

पूर्वांचल, कोलकाता। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा निर्धारित आयाम सेवा-संस्कार-संगठन को पूर्ण साकार करते हुए तेरापंथ युवक परिषद्, पूर्वांचल-कोलकाता एवं तेरापंथ किशोर मंडल, पूर्वांचल-कोलकाता ने साथ मिलकर सेवा कार्य हेतु श्री कृष्णा प्रणामि कनकुग्राची में ३५ वृद्ध लोगों हेतु सेवा कार्य किया।

संस्थान के संचालक ने कहा कि तेरापंथ युवक परिषद एवं तेरापंथ किशोर मंडल, पूर्वांचल-कोलकाता समय-समय पर इन बुजुर्गों को सहयोग करती रहती है और तेरापंथ युवक परिषद के उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना की। उन्होंने प्रायोजक सुनील कुमार मालू परिवार, तेरापंथ युवक परिषद एवं तेरापंथ किशोर मंडल के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उनके इस कार्य से वृद्ध बेसहारा लोगों के चेहरों पर मुस्कान आ गई।

आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर का स्थापना दिवस मनाया

गंगाशहर। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद गंगाशहर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर के सफलतम तीन वर्ष की परिसंपन्नता पर जैन संस्कार विधि से चतुर्थ स्थापना दिवस मनाया गया। इस अवसर पर एटीडीसी के संयोजक पीयूष लूणिया ने एटीडीसी की तीन वर्षों के कार्यों की विस्तारपूर्वक जानकारी दी तथा मानवता के प्रति की जा रही सेवाओं के बारे में बताया। एटीडीसी प्रभारी विजेंद्र छाजेड़ ने अपने भाव व्यक्त किये। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष अमरचंद सोनी ने कहा कि आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर को तेरापंथ युवक परिषद ट्रस्ट बहुत अच्छे ढंग से संचालित कर रही है। जैन संस्कारक देवेन्द्र कुमार डागा ने जैन संस्कार विधि के बारे में विस्तार से विवेचना करते हुए सबको इसके बारे में जानकारी अवगत करवाई। तेयुप गंगाशहर के अध्यक्ष अरुण कुमार नाहटा द्वारा भामाशाह विमल चोपड़ा व तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम गंगाशहर के अध्यक्ष डॉ. संजय लोढ़ा व डॉ. निमित्त सक्सेना को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा संजू लालाणी, मंत्री मीनाक्षी आंचलिया व तेरापंथ युवक परिषद एवं तेरापंथ किशोर मंडल की पूरी टीम का सहयोग रहा। तेयुप मंत्री भरत गोलछा ने सभी आगंतुकों का आभार प्रकट किया।

❖ जिसे तुम अपना मित्र बनाते हो, उसके साथ सच्चा हार्दिक संबंध कायम करो।
परस्पर एक-दूसरे का हित करने का संकल्प करो।।

-आचार्य श्री महाश्रमण

व्यक्तित्व विकास कार्यशाला : 'आसमान छू कर दिखाना है' का आयोजन

बैंगलोर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वाधान में तेरापंथ युवक परिषद राजराजेश्वरीनगर द्वारा बैंगलोर स्तरीय व्यक्तित्व विकास कार्यशाला 'आसमान छू कर दिखाना है' का आयोजन तेरापंथ भवन आर.आर. नगर में किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ सरगम फाइनलिस्ट गुलाब बांठिया द्वारा मंगलाचरण से किया गया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन अभातेयुप राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पवन मांडोट द्वारा किया गया। पवन मांडोट ने कार्यशाला का आगाज करते हुए अपने वक्तव्य से युवाओं में

जोश भरते हुए कहा कि परिषद अभातेयुप द्वारा दिए हुए हर काम को करने के लिए तत्पर है।

मुख्य वक्ता विक्रम सेठिया ने बताया कि आसमान छूने के लिए यह जरूरी नहीं कि आप कितने सफल हैं बल्कि यह देखें कि आप कितने सफल हो सकते हो। आपके द्वारा की गई कोशिश आपको सफलता के नये मुकाम पर पहुंचायेगी।

उन्होंने आगे कहा कि परिस्थितियों का बहाना बनाने वाला आगे नहीं बढ़ सकता है। परिस्थिति तो राजा राम के लिये भी उपयुक्त नहीं थी परंतु उन्होंने परिस्थिति को नहीं बल्कि लक्ष्य पर ध्यान

केन्द्रित रखा और उन्होंने विजय प्राप्त की। उन्होंने प्रेरणा देते हुए कहा कि दुनिया परिस्थिति नहीं अपितु परिणाम देखती है। संभाग प्रमुख अमित दक, टीपीएफ राष्ट्रीय सहमंत्री लक्ष्मीपत मालू, ट्रस्ट अध्यक्ष मनोज डागा, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा सुमन पटावरी ने अपने अपने विचार व्यक्त किए।

इस कार्यशाला के मुख्य प्रायोजक गुलाब देवी छाजेड़ एवं सहप्रायोजक गणपत दीपक कोठारी, उम्मेदसिंह जय पटावरी थे। कार्यशाला का सफल संचालन मंत्री धर्मेण नाहर व आभार ज्ञापन पंकज बैद ने किया।



ऑनलाईन पढ़ने के लिए
terapanthtimes.com

अखंड, प्रचंड और मजबूत हो आराध्य के प्रति भक्ति : आचार्यश्री महाश्रमण

सी. बी. डी. बेलापुर।

२२ फरवरी, २०२४

महामनीषी आचार्य श्री महाश्रमणजी वाशी से विहार कर सी.बी.डी. बेलापुर पधारे। अमृत देशना प्रदान करते हुए पूज्यप्रवर ने फरमाया कि श्रमण प्रतिक्रमण में पांच पाटियां विशेष हैं जो श्रावक प्रतिक्रमण से अलग हैं। पांचवी पाटी में भक्ति का स्वर मुखर होता है।

जहां प्रारम्भ में भगवान ऋषभ से लेकर भगवान महावीर तक के तीर्थकरों को नमस्कार किया गया है, वहीं आगे निर्ग्रंथ प्रवचन के प्रति एक श्रद्धा-आस्था का भाव अभिव्यक्त किया गया है। भक्ति में भी शक्ति हो सकती है। आराध्य के प्रति हमारी भक्ति निश्छिद्र होनी चाहिए। यथार्थ का अन्वेषण हो जाए तो फिर उसके प्रति आस्था होनी चाहिए। तीर्थकर अपने आप में वीतराग होते हैं, ज्ञान देने वाले, मार्ग दर्शन देने वाले, मोह मुक्त और ज्ञान युक्त होते हैं, इसलिए हम उनकी भक्ति करते हैं। आराध्य के प्रति समर्पण में शर्त नहीं होनी चाहिए। हमारा समर्पण हमारे आराध्य के प्रति और हमारे सिद्धांत के प्रति होना चाहिए। समझकर जिसको आराध्य बना लिया फिर उसके प्रति सघन भक्ति, अंतर्मन से समर्पण होना चाहिए।



हमारी भक्ति अर्हत्तों के प्रति, सिद्धों के प्रति, पंच परमेष्ठि के प्रति होनी चाहिए। धर्म के प्रति श्रद्धा और समर्पण का भाव होना चाहिए। समस्या आने पर भी धर्म को नहीं छोड़ना चाहिए। विपत्ति तो शायद परीक्षा के लिए आ सकती है कि आपकी धर्म के प्रति आस्था कितनी मजबूत है। हमें परीक्षा में फेल नहीं होना है, धर्म के

प्रति सुदृढ़ आस्था रखनी है। यह शरीर भले छूट जाए पर धर्म का धागा अखंड बना रहे। देवता भी धर्म से डिगाये तो डिगना नहीं चाहिये। देव-गुरु और धर्म पर आस्था रखें, उनके प्रति हमारी भक्ति अखंड-प्रचंड, मजबूत रहे। सिद्धान्तों के प्रति, नियमों के प्रति भी निष्ठा का भाव रहे। जो व्रत लिए हैं, उन पर

व्यक्ति संकल्पित रहे तो अपने पर अपना अनुशासन हो सकता है।

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने फरमाया कि आचार्यवर ने वृहत्तर मुंबई में चातुर्मास और वाशी में मर्यादा महोत्सव कार्यक्रम संपन्न किया और अब सूरत चातुर्मास के लक्ष्य के साथ आगे गतिमान हैं। मुनि के लिए विहार चर्या को प्रशस्त

माना गया है। जैन साधुओं ने पद यात्रा का संकल्प स्वीकार किया है। भगवान महावीर ने कितनी पदयात्रा की, आचार्य भिक्षु ने भी पद यात्रा का संकल्प लिया था। आचार्यवर तो महान यायावर बन गए क्योंकि आचार्यवर ने सुदूर यात्राएं की, विदेश की यात्रा भी की। पदयात्रा से दूसरों को बहुत कुछ दिया जा सकता है।

महात्मा गांधी कहते थे कि भारत की आत्मा गांवों में बसती है। आचार्यप्रवर भी गांव-गांव में सलक्ष्य यात्रा कर रहे हैं। जो व्यक्ति यात्रा करता है उसका मस्तिष्क और चिंतन भी विशाल होता है। आचार्यवर की यात्रा के दौरान व्यापक संपर्क होता है, लोग अपनी समस्याओं का समाधान प्राप्त करते हैं।

पूज्यवर की अभिवंदना में स्थानीय तेषुप अध्यक्ष नितिन मेहता, बेलापुर जैन संघ से तेजराज संचेती, विजय संचेती एवं डॉ नाथ ने अपनी अभिव्यक्ति दी। तेरापंथ महिला मंडल, स्थानीय तेरापंथ समाज, तेरापंथ कन्या मंडल ने पृथक-पृथक गीत की प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों एवं क्षेत्र के दिव्यांग बच्चों ने अपनी भावपूर्ण प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

परम जय को पाने की दिशा में आगे बढ़ें : आचार्यश्री महाश्रमण

कामोठे, मुंबई।

२४ फरवरी, २०२४

अध्यात्म साधना के शिखर पुरुष आचार्य श्री महाश्रमणजी आज खारघर से विहार कर कामोठे पधारे। मंगल देशना में अमृत वर्षा कराते हुए अमृत पुरुष ने फरमाया कि दुनिया में जय-पराजय की बात यदा-कदा सामने आती है। चुनाव में, युद्ध में, न्यायालय में कोई जीत जाता है तो कोई हार जाता है। यह जय-पराजय संसार में होती है। हम अध्यात्म के क्षेत्र में चिन्तन करें। शास्त्रकार ने बताया कि समरांगण में एक आदमी १० लाख योद्धाओं को जीत लेता है, तो उसकी विजय हो जाती है परंतु परम जय उसकी होती है, जो एक अपनी आत्मा को जीत लेता है। आत्मा को जीतना बड़ा कठिन कार्य होता है।

प्रश्न है कि आत्मा को कैसे जीते? आत्मा तो अदृश्य है, उस पर प्रहार कैसे करें?

कर्म से आवृत्त अवस्था में अमूर्त



आत्मा पर मूर्तता छापी रहती है, फिर भी उसको आंखों से नहीं देखा जा सकता। कर्म पुद्गल बड़े सूक्ष्म होते हैं। आत्मा को तो हम नहीं देख सकते पर शरीर, वाणी और मन को जान रहे हैं। आत्मा को जीतने के लिए हमारा शरीर, वाणी, मन और इंद्रियां हमारे नियंत्रण में रहे। पूर्णतया वीतरागता प्राप्त हो जाए तो बड़ी जीत हो सकती है। शरीर आदि पर अनुशासन हो जाये

तो उसका प्रभाव आत्मा पर पड़ सकता है। तपस्या आदि से निर्जरा हो सकती है, ध्यान-साधना भी निर्जरा का साधन है। शरीर से असंयम और हिंसा नहीं हो, खाने में आसक्ति न हो, वाणी का भी विवेक हो, मन को अभ्यास और वैराग्य से अनुशासित करें, चंचलता को कम करें तो हम आत्मा पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। इंद्रियों का भी विवेकपूर्ण संयम रखें। बुरा देखो मत, बुरा सुनो

मत, बुरा बोलो मत और बुरा सोचो मत। अपनी आत्मा, अपने कषायों को जीतना बड़ा काम है, हम परम जय पाने की दिशा में आगे बढ़ें।

साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि एक मार्ग सीधा होता है, जो चलते-चलते अपने गंतव्य तक पहुंचा देता है। दूसरा मार्ग प्रारंभ में सीधा पर अंत में टेढ़ा हो जाता है। तीसरा मार्ग प्रारंभ से अंत तक वक्र ही रहता है।

चौथा मार्ग प्रारंभ में टेढ़ा मेढ़ा और अंत में सीधा हो जाता है। मार्ग पर बढ़ने से पहले तीन बातें ध्यान से देखें : मुझे कहां जाना है? किस रास्ते से जाना है? और रास्ते में मेरा मार्गदर्शक कौन है? इन तीन बातों पर विमर्श कर हम मंजिल तक पहुँच सकते हैं। हमारी मंजिल हमारा अपना घर, हमारी आत्मा में है।

मुंबई प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष मदन लाल तातेड ने तेरापंथ विश्व भारती के संदर्भ में जानकारी प्रदान की। पूज्यप्रवर के स्वागत में मनोज बाफना, स्वागताध्यक्ष मंजू बाफना, स्थानकवासी समाज से विजयसिंह बोहरा व विनोद बाफना ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। तेरापंथ युवक परिषद्, तेरापंथ महिला मंडल एवं तेरापंथ किशोर मंडल ने पृथक पृथक गीत संगान किया। ज्ञानशाला की सुन्दर प्रस्तुति हुई।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

कर्तव्य और अकर्तव्य के प्रति हों जागरूक: आचार्यश्री महाश्रमण

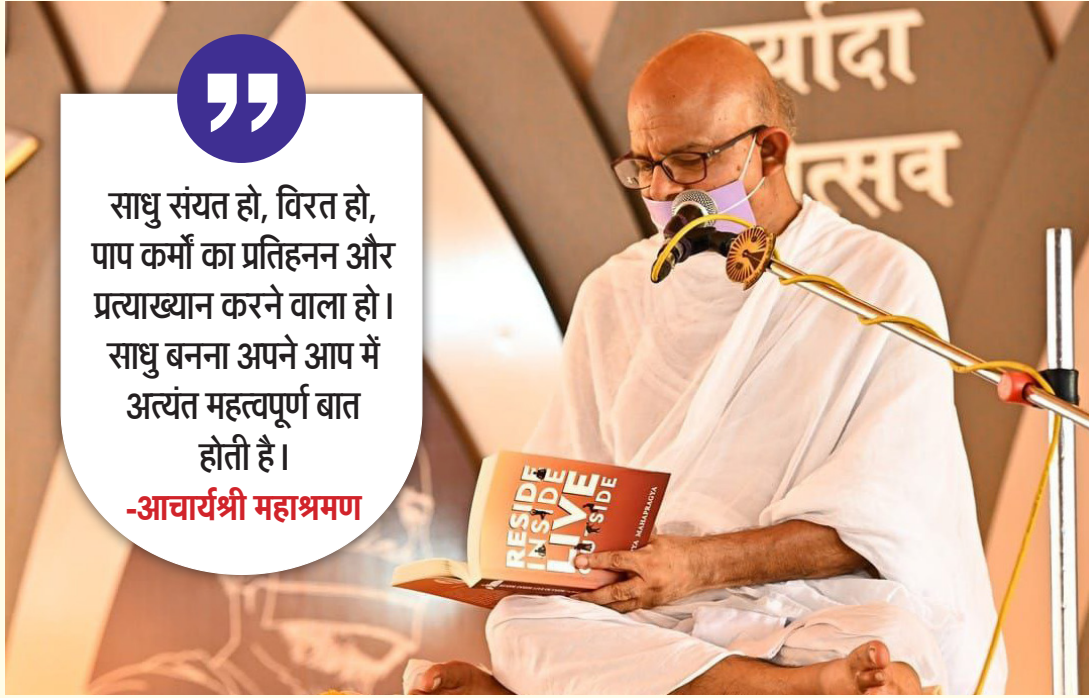
वाशी, मुंबई।

२० फरवरी, २०२४

तेरापंथ धर्म संघ के एकादशम् अधिशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी ने पावन अमृत देशना प्रदान करते हुए, फरमाया कि साधु संयत हो, विरत हो, पाप कर्मों का प्रतिहनन और प्रत्याख्यान करने वाला हो। साधु बनना अपने आप में अत्यंत महत्वपूर्ण बात होती है। आत्म कल्याण के संदर्भ में इंजीनियर, डॉक्टर, न्यायाधीश, प्रोफेसर आदि बनने की अपेक्षा में साधु बनना बहुत बड़ी बात होती है।

साधु का सबसे पहला कर्तव्य है- साधुत्व की रक्षा करना। साधु विद्वान, साहित्यकार, वक्ता आदि बने अथवा न भी बने पर उसकी साधुता अच्छी होनी चाहिये। हमारे जीवन में कर्तव्य का बहुत महत्व होता है। कर्तव्य का बोध होना और उसका पालन होना दोनों आवश्यक है। व्यक्ति को बोध होगा तभी व्यक्ति कर्तव्य पालन की दिशा में आगे बढ़ सकता है।

आचार्य तुलसी ने कर्तव्य षड्विंशिका में लिखा है: 'जो व्यक्ति अपने कर्तव्य को नहीं जानते उनका ऐसा अनिष्ट हो सकता है जिसकी उन्होंने



साधु संयत हो, विरत हो,
पाप कर्मों का प्रतिहनन और
प्रत्याख्यान करने वाला हो।
साधु बनना अपने आप में
अत्यंत महत्वपूर्ण बात
होती है।

-आचार्यश्री महाश्रमण

शायद कल्पना भी नहीं की हो।'

हमें कर्तव्य को भी जानना चाहिए व अकर्तव्य को भी जानना चाहिए। भगवान ऋषभ ने गृहस्थ अवस्था में कितने लौकिक कार्य किए, उनका प्रशिक्षण भी दिया होगा। वे तीर्थकर बनने वाले थे, फिर भी सावध कार्यों का प्रवर्तन किया। इन सबके पीछे उनका कर्तव्य था, लौकिक अनुकंपा के कारण

उन्होंने गृहस्थोचित लौकिक कर्तव्य का पालन किया।

कर्तव्य सबके अलग-अलग हो सकते हैं, पर अपने कर्तव्य के प्रति सबको जागरूक रहना चाहिए। कर्तव्य-अकर्तव्य का विवेक होना चाहिए, इसकी अविद्यमानता में आदमी पशु समान हो जाता है। ना तो बोलना बड़ी बात है न मौन होना, बड़ी बात है बोलने और न

बोलने का विवेक रखना। न खाना खाना बड़ी बात है न उपवास करना, बड़ी बात है खाने में विवेक रखना। हर कार्य में विवेक का बड़ा महत्व है, हम विवेक के प्रति जागरूक रहें, अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक रहें।

संगठन में सबके साथ मैत्री भाव रहे पर किससे क्या काम लेना है, किसको क्या कार्य सौंपना है, उसमें विवेक रहे।

मैत्री अलग है, विवेक अलग है। सबके साथ समान व्यवहार भी एक सीमा तक हो सकता है, उसमें भी विवेक होना चाहिए। विवेक पूर्ण व्यवहार होना चाहिए। निष्पक्षता अलग है पर कर्तव्य पालन में विवेक चाहिए।

आचार्य श्री महाश्रमण जी की कृति 'रहो भीतर जीयो बाहर' के अंग्रेजी अनुवाद की पुस्तक जैन विश्व भारती के पदाधिकारियों द्वारा पूज्य प्रवर को अर्पित की गई।

साध्वी वीरप्रभाजी द्वारा अनुवादित इस पुस्तक 'Reside Inside Live Outside' का लोकार्पण पूज्य प्रवर के कर कमलों से हुआ। इस संदर्भ में साध्वी वीरप्रभाजी ने अपनी भावना व्यक्त की। अमेरिका से समागत रजनी जैन ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

समणी नियोजिका जी अमलप्रज्ञा जी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। रेणु अरविन्द कोठारी ने अपने गीतों की श्रृंखला पूज्य प्रवर को समर्पित करते हुए प्रस्तुति दी। डॉ बलवंत ने सीपीआर ट्रेनिंग की जानकारी दी।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

ऑनलाइन पढ़ने के लिए
terapanthtimes.com

शक्ति का विवेक के साथ हो सदुपयोग: आचार्यश्री महाश्रमण

वाशी, मुंबई।

२१ फरवरी, २०२४

ग्यारह दिवसीय वाशी प्रवास के अन्तिम दिन तेरापंथ के महासूर्य आचार्य श्री महाश्रमण जी ने मर्यादा समवसरण में पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि जीवन में शक्ति का बहुत महत्व होता है। शक्ति के योग से आदमी कुछ भी कर सकता है, शक्तिहीन आदमी क्या कर पायेगा? सबल होना एक विशेष बात होती है।

अनेक प्रकार के बल बताए गए हैं। पहला है, तन बल- शरीर यदि शक्ति सम्पन्न है, ऊर्जावान है, सबल है तो व्यक्ति कोई भी कार्य कर सकता है। दूसरा है, मन बल- मनोबल हो तो आदमी असंभव काम के लिए भी साहस कर सकता है। मन कमजोर पड़ने से कोई भी काम करना मुश्किल हो सकता है। तीसरा बल बताया गया- वचन

बल। किसी के पास वाणी का बल हो तो उसका कहा हुआ दूर तक सुना जा सकता है। परम पूज्य गुरुदेव तुलसी माइक के बिना भी प्रवचन-व्याख्यान फरमाते थे। आज तो माइक की व्यवस्था है, जिससे जोर से बोलने की अपेक्षा नहीं रहती। फिर भी वाणी का बल और प्रभाव होना चाहिए ताकि जो बात कही जाए वो स्वीकार कर ली जाए।

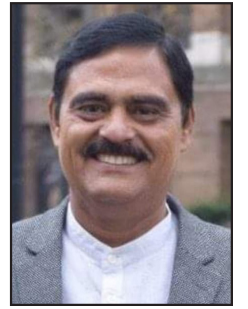
गृहस्थों में धनबल का भी महत्व है। साथ में जनबल का भी महत्व है। चुनाव में जनबल का साथ है तो उम्मीदवार जीत सकता है। बुद्धि का भी बल होता है। जिसके पास बुद्धि है उसके पास बौद्धिक बल होता है। चिंतन, सोच, योजना और क्रियान्विति इन सबके लिए बुद्धि का बल आवश्यक है।

अध्यात्य साधना का बल, तपोबल का भी विशेष महत्व होता है। शास्त्रकार ने कहा- शक्ति का गोपन मत करो। शक्ति का सदुपयोग करें। (शेष पृष्ठ ४ पर)

शुभकामनाएं

श्री मनसुख लाल सेठिया पुनः निर्वाचित हुए महासभा अध्यक्ष

छोटी खाटू निवासी भुवनेश्वर प्रवासी श्री मनसुख लाल सेठिया जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष के रूप में सत्र २०२२-२४ में सेवा देने के बाद एक बार पुनः सत्र २०२४-२६ के लिए अध्यक्ष पद के रूप में निर्वाचित हुए हैं। आप धर्मसंघ को महनीय सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। इससे पूर्व भी दो कार्यकाल में महासभा में न्यासी के रूप में आपने अपने दायित्व का निर्वहन किया है। इसके अतिरिक्त आप राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (ओडिशा) श्रीराम जन्मभूमि मंदिर निधि समर्पण समिति में भी विभिन्न पदों पर रहकर अपनी महत्वपूर्ण सेवाएं दे रहे हैं। आप मार्बल व्यवसाय से जुड़े हुए सफल व्यवसायी भी हैं।



श्री निर्मल मीठालाल जैन (श्रीश्रीमाल) बने सिरियारी संस्थान के अध्यक्ष

खिवाड़ा निवासी ठाणे प्रवासी श्री श्री निर्मल मीठालाल जैन (श्रीश्रीमाल) सत्र २०२४-२०२६ के लिए आचार्य भिक्षु समाधि स्थल संस्थान, सिरियारी के अध्यक्ष रूप में निर्वाचित हुए। सिरियारी संस्थान में विगत लगभग २५ वर्षों से सेवा देते हुए आपने पिछले सत्रों में संस्थान में कार्यकारिणी सदस्य, कोषाध्यक्ष, एवं महामंत्री के रूप में भी आपने कार्य किया है। तेरापंथ सभा, मुंबई के कोषाध्यक्ष तथा तेरापंथ सभा(ठाणे) में आपने अध्यक्ष के रूप में सेवाएं दी हैं। आप धर्मसंघ की केंद्रीय संस्थाओं में भी सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं।

